भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 9 | अंक 07 | उदयपुर सोमवार 15 अप्रेल 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

'लोक' के अंतर्संबंधों से फलित आदिवासी कलाएं

– डॉ. भगवानदास पटेल –

लोकविद्याविद् मौखिक परंपरा को लोकविद्या की एक उपशाखा के रूप में स्वीकार करके उसका अध्ययन करते हैं। इस के लिए 'लोक-साहित्य' शब्द रूढ़ हुआ है।

भारतीय संस्कृति का आदिमूल 'लोक' ही है। यह संस्कृति भारतीय दृष्टिलोक का गौरवगान किये होती है। महाभारत में व्यास कहते हैं, 'प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्तर:' (उद्योग पर्व, 43-36, पूना)। अर्थात् प्रत्यक्षदर्शी लोक ही समग्र विश्व को हर तरफ से देखने वाला होता है। जो लोक को जानता है वह सर्व को जानता है। चाणक्य 'अर्थशास्त्र' में राजा के लिए लोकसत्ता को सर्वज्ञता (श्लोक-542) कहते हैं और आगे स्पष्ट करते हैं, 'शास्त्रऽपि लोकअज्ञो मूर्खतुल्य (543)।

अर्थात् जो शास्त्र का ज्ञानी होकर भी लोक से अनभिज्ञ हो, तो वह मूर्ख जैसा है। भारतीय दृष्टिलोक को संपूर्ण जीवन में व्याप्त और जीवन के सजीव अंग के रूप में स्वीकार करती है। अत: वह लोक को अस्मीकृत और निर्जीव नहीं, अपितु निरंतर अंकुरित होते, सदा वर्धमान और नित नये रूप धारण करते सजीव जीवन के रूप में देखती है।

लोक समाज के विघटन के साथ विघटित नहीं होता किन्तु परिवर्तित होता है। वह अपनी अपार जिजीविषा के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन को आत्मसात् कर आधुनिक यंत्रयुग के थपेड़े झेलता परिवर्तित होता; रूपान्तरित होता है; किन्तु मरता नहीं है।

आदिवासी और लोकसमाजों में अब भी ऐसी अनेक प्राक्-आधुनिक परंपराएँ जीवित हैं जिनको विकास के आधुनिक झंझाप्रवाह ने नष्ट नहीं कर दिया है। इन समाजों में आधुनिकता के सम्पर्क से पैदा हुए बदलाव साफ दिखाई देते हैं, लेकिन परम्परा से अपसरण की प्रवृत्ति यहाँ इतनी प्रबल नहीं दीखती कि उनकी सांस्कृतिक अस्मिता से विसर्जित हो उठने की आशंका उत्पन्न हो जाए।

बीसवीं सदी के आरंभ में लोकविद्या का अध्ययन पश्चिम में हुआ था। वहां के अध्येताओं ने लोक का अर्थ आदिवासी (ट्राईबल) किया था। अध्ययन के दूसरे चरण में उसका अर्थ ग्रामीण किया गया और यह अर्थ व्यापक भी हुआ। अब लोक का अर्थ 'जिसके भाषा-बोली, वस्त्राभूषण, जीवन एवं जगत को देखने-समझने एवं अनुभव करने का दृष्टिकोण एक है वैसा एथनिक ग्रुप' है। ऐसे सामाजिक समूह में नागरिक एवं शिक्षित का भी समावेश होता है। उनका भी अपना 'लोक' होता है जो मौखिक एवं लिखित भी होता है। ऐसे सामाजिक समूह की परंपरित विद्या (ज्ञान), 'लोकविद्या' है और उसका मौखिक या लिखित साहित्य 'लोकसाहित्य' है।

मौखिक साहित्य कंठ वाहक होता है। उसका वैयक्तिक सर्जक नहीं होता, और अगर होता भी है तो वह 'व्यक्ति' न रह करके 'समाज' बनकर रह जाता है। वह संबंधित समाज की सामाजिक तथा धार्मिक परंपरा को मानस में लेकर जीता है । इस परंपरा के साथ उसकी प्रगाढ़ धार्मिक आस्था का अनुबंध-अंतरसंबंध होता है। ऋतुचक्र के साथ जुड़े हुए उचित सामाजिक प्रसंग पर लोकसमूह के बीच उसके मानस में स्थित परंपरा में से निसृत होकर कंठस्थ साहित्य कलामय रूप धारण करता है।

बहुत बार भील मौखिक लोकाख्यानों में आते देव-देवियों के चरित्रों के साथ वाहक-गायक एवं श्रोताओं का इतनी हद तक तादात्म्य होता है कि वे स्वयं वही देवी-देवता बन जाते हैं और उनकी देह में संबंधित देवी-देवता का भाव प्रगट होता है और इकट्ठे हुए लोकसमुदाय को आशीर्वाद भी देते हैं।

1983 में उत्तर गुजरात के डुंगरी भीलों का मैं धार्मिक कंठस्थ महाकाव्य 'गुजरांनो अरेलो' ध्वनिमुद्रित कर रहा था तब बहुत दिनों से धार्मिक चरित्रों के साथ तदाकार बने गायक जीवाभाई गमार स्वयं प्रमुख चरित्रनायक देवनारायण कैसे बन गये थे; वह प्रसंग अंकित करने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूं।

अरेले के उत्तरार्ध में देवनारायण का अंतिम प्रसंग आया। रात आठ बजे जीवाभाई की झोंपड़ी में देवनारायण मौखिक महाकाव्य का अंतिम अंश सुनने के लिए लोकसमुदाय इकठ्ठा हुआ। सारी रात लोग प्रबल धार्मिक आस्था से धार्मिक प्रसंग-घटनाओं के साथ डूबते-तैरते रहे। सुबह सूर्य की किरणों में पितृ बैर की समाप्ति के बाद देवनारायण के डोळीराण नगरी के गाड़ने का प्रसंग पूर्ण होने के साथ ही गायक की देह में एक आधिदैविक भाव प्रगटा। चारों ओर एकत्रित दर्शक-श्रोता जोर-जोर से हुँकारी भरने लगे और गायक मानों स्वयं देवनारायण हो गये! उनके सन्मुख एक पत्थर रखकर गत रात लाए श्रीफल चढ़ाये गये।

दर्शक-श्रोता देव को मनुहार करने लगे, 'खम्मा मालकांन! अमार भली करझे देवजी कुंवर! अमे तो अवरएं बोलीएं नं गवरएं बोलीएं, पण तुं स अमारो बेलु (बोली) हें! थार वेंणुं (तेरे बिना) तो तखलुंय (तृण भी) तोरी हकीएं नें!' अर्थात् खम्मा मालिक को! हमें कुशल रखना देवनारायण कुंवर! हम तो अच्छा भी बोलें और बुरा भी बोलें किंतु तू ही हमारा बेली है। तेरे बिना तो एक तृण भी तोड़ नहीं सकते।

जीवाभाई, कि जो अभी चरित्र नायक देवनारायण बन गये थे; आशीर्वचन बोल रहे थे, 'तमे बताए कॅणा दि ही मारो सेवाभाव करो हैं, झो'ला तमार बत्तांनुं खेमाकहोर (क्षेमकुशल) थाहें! लीली वारी फूलहें।' मेरी ओर देखकर उन्होंने कहा था, 'थारुय रामा सांमा (राम राज्य) थाहें!' अर्थात् तुम्हारे परिवार की हरी बाड़ी पुष्पित होगी। फिर मेरी ओर देखकर कहा था, 'तुम्हारा भी रामराज्य होगा!' उस दिन लगा था कि मुझे अब किसके आशीर्वाद की आवश्यकता थी?

गुजरात के खेड़वा गाँव के नाथाभाई गमार के मुख से 'भीलों का भारथ' ध्वनिमुद्रित करता था तब घटित घटना यहाँ अंकित करता हूँ –

भादो मास की एक मेघाच्छन्न साँझ; हम दोनों उनके आँगन में नीम के नीचे बैठे थे। तंबूर को अंक में रखकर आत्मा के साथ संधान करते नाथाभाई साधु को मैंने प्रश्न पूछा, 'नाथाभाई, यह तंबूर मुझे दोगे?' विक्षेप पड़ने से उनकी समाधि टूटी। खुली आंखें से रोष प्रगटा। चंद क्षणों में वे फिर सौम्य बन गये। दु:ख की आर्द्रता के साथ उनके अंत:करण से उद्गार निसृत होने लगे, 'पाई, आंणो तबूरो तो मार बा है।' उनके भीली बोली के वाक्प्रवाह का विस्तार भय से यहाँ भाषांतर देता हूँ। वाक्प्रवाह आगे चलता है, 'भाई, यह तंबूर मेरा अपना बाप है। इस तंबूर से मैं और पिताजी भजन गाते थे। मेरा और पिता का हृदय एक होता था। सरस्वती कंठ में आती थी और दोनों के हृदय में भजन आविर्भूत होते थे। राम-सीता, पाँच पांडव, सतिया चंदन, गोपीचंद-भरथरी और हरिश्चंद्र राजा सब चोखे दिखते थे। उनके दर्शन करते थे। आज मेरा अपना बाप तो नहीं है किंतु बाप ने दिया तंबूर है। इसको देखता हूँ और मुझे अपने स्वर्गवासी पिता याद आते हैं। भाई, यह तंबूर तो साक्षात् मेरा बाप है। तुझे यह तंबूर नहीं दे सकता!'

लोक समाज के विघटन के साथ विघटित नहीं होता किन्तु परिवर्तित होता है। वह अपनी अपार जिजीविषा के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन को आत्मसात् कर आधुनिक यंत्रयुग के थपेड़े झेलता परिवर्तित होता; रूपान्तरित होता है; किन्तु मरता नहीं है। मौखिक साहित्य कंठ वाहक होता है। उसका वैयक्तिक सर्जक नहीं होता, और अगर होता भी है तो वह 'व्यक्ति' न रह करके 'समाज' बनकर रह जाता है। वह संबंधित समाज की सामाजिक तथा धार्मिक परंपरा को मानस में लेकर जीता है । इस परंपरा के साथ उसकी प्रगाढ़ धार्मिक आस्था का अनुबंध-अंतरसंबंध होता है। ऋतुचक्र के साथ जुड़े हुए उचित सामाजिक प्रसंग पर लोकसमूह के बीच उसके मानस में स्थित परंपरा में से निसृत होकर कंठस्थ साहित्य कलामय रूप धारण करता है।

मुझे लगा था कि मैंने अनजान में अघटित मंगनी करके साधु की आत्मा का अपराध किया है। साथ-साथ वाहक गायक का मौखिक साहित्य के आलंबन-आधार रूप अपने संगीत के साधनों के साथ और अपनी पूर्व पीढ़ी तथा परंपरा के साथ कैसा आत्मिक संबंध और संधान होता है, इसका पता चला। इस परंपरा का संधान संबंधित प्रदेश के देव-देवियों के स्थानों के साथ भी होता है। निर्जीव लगते ये स्थान लोक के जीवन के मूलाधार होते हैं। इन देवस्थानों के साथ लोक की प्रगाढ़ श्रद्धा सम्मिलित हुई होती है। अत: मनौती जैसे धार्मिक प्रसंगों पर वाहक-गायक के हृदय में से देवी-देवता के महिमा भरे संख्यातीत गीत विविध तर्ज-राग-ढाल-नृत्य के साथ लोक समुदाय के बीच आविर्भूत होते हैं और दु:ख में भी लोक को जीने का बल देते हैं।

संशोधक-शोधार्थी और मौखिक साहित्य के वाहक-गायक का रिस्ता कैसा होना चाहिए यह बाबत एक गीतकथा की गायिका को इस शोधार्थी ने पूछे प्रश्न के उत्तर से मिलता है- हररोज गाने से गीत में आते देवता लोग दु:खी हो जाय! उनको दु:ख पड़ने से अपने से भी देखा न जाये। अत: हम भी दु:खी होंवे। गीत सुननेवाले (श्रोता) भी दु:खी हो जायें। गीत खत्म हो जाने के बाद लोकमेला अपने-अपने घर चला जाये। मैं अकेली हो जाऊँ तब मुझे गीत में आये देवता लोगों की याद आए और मेरी आँखों से सावन-भादो बरसने लगे!

हरमांबाई के लिए गीत में आते देवी चरित्र जीवित देवी-देवता हैं। गीत गाने से वे मूर्तरूप धारण करते हैं और उनके जीवन में घटित करुण घटनाओं से वे दु:खी होते हैं। वे दु:खी होते हैं अत: गायिका भी दु:खी होती है। सुनने वाले श्रोता भी दु:खी होते हैं। इसके बाद हरमां आई ज्यादा भावसबल बनके मुक्त मन से बोलने लगी थी, 'मार पॉस सैया हैं। पॉण ओंणा बत्ता पापीला हैं। मार पापमाही पेंदा था हैं। एक थुं हैं जो मार धरमनो दीकरो हैं न मार मनं सतनो सैयो हैं। खेर (खेडब्रह्मा गाँव) हो आवें न आई! आई! करतो मार कने बेहे। थुं आवें एतण बैइरो (पवन) वाझॅन वरसारामा (बारिश में) लीलुं खोर (घास) खल्लाटा मारे एम मारो हरदो (हृदय) पण खूस्सीहो खल्लाटा मारे थें कटं एतण में परु गीत गायुं (गाया) । नकर परु गीत गातीस नहीं ने!' अर्थात मेरे पाँच पुत्र हैं, किन्तु सब पापी हैं! मेरे पाप से पैदा हुए हैं। एक तू है, जो मेरा धर्म का पुत्र है और मेरे मन सत्य का पुत्र है। खेडब्रह्मा गाँव से आता है और माँ ! माँ! बोलता हुआ मेरे पास बैठता है । तू आता है तब पवन बहता है और बारिश में घास डोलने लगती है वैसे मेरा हृदय खुशी से डोलने लगता है। तूने कहा अत: मैंने पूरा गीत गाया। नहीं तो मैं पूरा गीत गाती ही नहीं!

अनेक युगों का इतिहास सँजोकर बैठी हुई और संगीत के विविध रूप धारण करके शत-शत धाराओं में बहती इस 'कंठवेद' के समान लोकगंगा के लोकानुरूप अनेकविध स्वरूप पाए जाते हैं। साथी प्रमी विषयक प्रणयगीत, लोकमंत्रों के संदर्भ से उद्भुत पूर्वकालीन कथाएँ (मिथ), अरेला, भजन- वारता, हग तथा वर्तामणांनां गीतां, भीली रामकथा- पांडवकथा का दीर्घ भजनरूप, लोकमहाकाव्य तथा लोकाख्यान जैसे लोक स्वरूप पहली बार ही भारतीय मौखिक साहित्य के क्षेत्र में प्रविष्ट हुए हैं।

आदिवासी लोकसाहित्य लोक के संस्कृति-समाज के जीवन मूल्यों से आविर्भूत होता है। अत: जीवन के साथ उसका प्रत्यक्ष अनुबंध-अंतर्संबंध होता है। भील आदिवासी समाज का नाट्य सिर्फ दर्शकों के सामने प्रदर्शित करने की नृत्य-नाट्य-संगीत की कला ही नहीं है, परंतु गाँव के मनुष्यों और पालतू पशुओं में से आधि-व्याधि-उपाधि जैसी बीमारियाँ दूर करने का धार्मिक अनुष्ठान होता है। अत: वह ग्रामीण लोकनाट्य और प्रशिष्ट नाटक अलग पड़ता भीलों के धार्मिक अनुष्ठान और आनुष्ठानिक नाट्य की एक विशेषता यह है कि भोपा द्वारा अभिनीत कथा या प्रसंग पर दर्शक समुदाय की आस्था घनिष्ठ होती है। लिखित साहित्यिक नाटकों को ऐसी आस्थामूलक लोकमानस की क्रियाशीलता का लाभ नहीं मिलता। ऐसे नाटक यथार्थ से ज्यादा नजदीक आते हैं। आदिवासियों के आनुष्ठानिक नाटकों और प्रशिष्ट साहित्यिक नाटकों का यह प्रमुख भेद है। यथार्थ और धार्मिक आस्था का यह भेद होने से आदिवासी धार्मिक नाटकों के दर्शकों की संशयहीन समर्पण की भावना का लाभ साहित्यिक नाटकों को नहीं मिलता।

सूक्ष्म मानवीय बातों के प्रभाव से भील आदिवासी लोकसाहित्य और उसके प्रकार गीत, कथा, नाट्य, लोकाख्यान, लोकमहाकाव्य आदि स्वरूप धारण करते हैं। भील आदिवासी समाज में प्रचलित लोकगीत, लोककथा, लोकमहाकाव्य, लोकाख्यान आदि लोकसाहित्य एवं संगीत-नृत्य-नाट्य आदि आंगिक कलाएँ सिर्फ जिज्ञासा की तृष्टि करने का या कथा-श्रवण नृत्य का आनंद प्राप्त करने का साधन ही नहीं हैं, किन्तु समाज के मेहत्त्व के व्यवहारों को कार्यशील करने का शक्तिशाली माध्यम हैं। मौखिक परंपरा परिवार और समाज के बीच एकता स्थापित करती है। मौखिक परंपरा कला ही नहीं है, जीवनामृत और जीवन रसायन है।

क़मर मेवाड़ी के नाम साहित्यकारों के पत्र (6)

शब्द रंजन के 01 अप्रेल 2024 के अंक में आप पढ़ चुके हैं, क़मर मेवाड़ी के नाम हसन जमाल के पत्र। यहां पढ़िये अन्य साहित्यकारों के पत्र –

(1)

ज्ञानरंजन का जबलपुर से लिखा दिनांक 12 दिसम्बर 1994 का पत्र –

प्रिय क़मर मेवाड़ी,

हार्दिक अभिवादन। तुम्हारा कार्ड मिला। यह जानकर बहुत आघात लगा कि तुमको दिल का दौरा पड़ा। लोगों को, दूसरे मित्रों को सूचना जरूर देनी थी। तुम शीघ्र स्वस्थ हो जाओ, यही कामना है। तुम अपनी सेहत की कीमत पर जयपुर मत आना। हालाकि तुम रहोगे तो कुछ अच्छा ही लगेगा और कुछ जरूरी संवाद भी होगा। अपना ध्यान रखना। मैं 24 को तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा।

आपका
ज्ञानरंजन

(2)

ज्ञानरंजन का जबलपुर से लिखा दिनांक 10 फरवरी, 2004 का पत्र –

प्रिय साथी,

आपका पत्र मिला। इस समय हम 21-22 फरवरी को पहल सम्मान नागपुर में बहुत व्यस्त हैं। पहल 75 आपको दोबारा भेज रहे हैं। न भेजने का सवाल ही नहीं उठता। आप हमारे कर्मठ साथी हैं। जीवन आपने भी दिया है।

आप अप्रेल में जरूर आएं। आपका स्वागत है। कटनी से जबलपुर निकट है। जब चाहें आ सकते हैं। बस टेलीफोन से सम्पर्क कर लें ताकि असुविधा से बचें। उसी समय बातें होंगी।

आपका
ज्ञानरंजन

(3)

विजेन्द्र का जयपुर से लिखा दिनांक 24 जून, 1995 का पत्र –

प्रिय भाई,

पत्र, मुझे परितोष मिला कि आपको सामग्री यथा समय मिल गयी। आपको इसके लिए कृतज्ञता व्यक्त करने की जरूरत नहीं। मैं जीवन भर अपनी इन्हीं रचनाशील साहित्यिक पत्रिकाओं में लिखकर संतुष्ट रहा हूं। मैं आपके प्रांत में रहता हूं। आप मन मिजाज और रचनाकर्म से अपने हैं तो फिर रचना भेजना मात्र औपचारिकता नहीं बल्कि हमारा महता दायित्व है। बहरहाल, मुझे अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

मेरा एक कविता संग्रह 'ऋतु का पहला फूल', पृष्ठ 208 पंचशील से पिछले वर्ष छपा है। आपने देखा या नहीं, यदि समय और स्थान हो तो आप उक्त संकलन की समीक्षा दे सकें तो विचार करें। किस से लिखवायेंगे यह तो आप तय करें फिर समय पर लिखकर आ सकें। हां, डॉ. वीरेन्द्रसिंहजी ने एक समीक्षा उक्त पुस्तक पर लिखकर मुझे सूचित किया है, आप चाहें तो उन्हें लिख सकते हैं। पता मैं दे रहा हूं।

डॉ. वीरेन्द्रसिंहजी
5 झ 15, जवाहरनगर, जयपुर (राज.)

जयपुर, जुलाई में तुम आओगे- यहां एक कार्यक्रम मृदुलजी रखवा रहे हैं तब इसकी एक प्रति दे दूंगा। दरअसल 150 रूपये कीमत है। प्रकाशक प्रतियां देने में हिचकता है। बहरहाल जैसा भी हो सूचित करना। कभी जयपुर आओ तो भेंट हो, बहुत दिन हुए बिना मिले।

सस्नेह
विजेन्द्र

(4)

विजेन्द्र का जयपुर से लिखा दिनांक 29 सितम्बर, 2007 का पत्र –

प्रिय भाई,

'सम्बोधन' जुलाई-सितम्बर-07 में आपने मुखपृष्ठ पर चित्र दिया है और 'आधी रात के रंग' की समीक्षा भी। दोनों के लिए आपका आभार व्यक्त करता हूं। कईबार सोचता हूं कैसे समय निकल गया, इतनी उम्र हो गई, रचना की ताकत ही हम लोगों को जिन्दा रखे हुए है। आप प्रसन्न होंगे। सपरिवार शुभकामनाओं सहित-

सस्नेह
विजेन्द्र

(5)

योगेन्द्र किसलय का बीकानेर से लिखा दिनांक 27 अगस्त, 1997 का पत्र –

प्रिय क़मर,

अंक मिला। पढ़ा। कई बार। पिछले तीन वर्षों से बीमार रहा। मौत से जूझना पड़ा। बच गया। दिल्ली एक वर्ष अस्पताल में रहा। डाक्टरों की मेहबानी। एक फेंफड़ा पूरा निकाल दिया। अब थोड़ा स्वस्थ हुआ हूं। कम्पन के कारण लिखने में बहुत दिक्कत होती है।

मणि नहीं रहा। उसके बारे में बहुत सोचा इन दिनों। वाकई श्रेष्ठ कृतिकार था। उसकी पत्रों की बिरादरी दो बार पढ़ी। मुझे तो उसके निधन का समाचार देरी से मिला। किसी ने बताया ही नहीं। लिखूंगा उसके बारे में। शीघ्र ही भेजूंगा।

आपका
योगेन्द्र किसलय

'सम्बोधन' के स्वर्ण जयंती वर्ष पर प्रसिद्ध कवि कथाकार और गीतकार त्रिलोकी मोहन पुरोहित को सम्मानित करते कर्नल देशबंधु आचार्य, डॉ. महेन्द्र भानावत और जेके इंडस्ट्री के महाप्रबंधक (वाणिज्य) अनिल मिश्रा।

(6)

विष्णुचन्द्र शर्मा का दिल्ली से लिखा दिनांक 11 जून, 2002 का पत्र –

प्रिय क़मर,

7.6 का पत्र पढ़कर सोच में पड़ गया। यह दिल भी अजीब है। कब भटक दे, कब पुचकार कर बैठा दे। मेरी पत्नी भी तीन दौर के बाद उसके गिरफ्त से बया करती थी। तुम्हें भी हंसना चाहिये और दूसरे या तीसरे दिल के भटके का इन्तजार नहीं करना चाहिए। अब तक तुमने आराम नहीं किया- सम्बोधन के होते खुद को आग में झोंकते ही रहे- अब थोड़ा आराम करो और यहां (बिना मौत से डरे) आ जाओ। यहां तुम्हारे आत्मीय जन हैं। उनसे मिलकर तुम्हें सुकून मिलेगा।

अगस्त के अन्त में जस्ट आओ और खूब घूमने का मन बनाए रखना। शहरोज भी तुम्हें याद कर रहा है। कांकरोली में कैद रहना जरूरी भी नहीं है। बाबा कहा भी करते थे- घूमना जिस दिन छोड़ दूंगा, उसी दिन बिस्तर में पड़ जाऊंगा। तुम्हें अभी खूब घूमना है और लिखनी है अपनी बात। मेरे काशी प्रसंग पर प्रो. महेश दुबे इन्दौर और सुधीर विद्यार्थी बीसलपुर का आत्मीय पत्र मिला है।

'सम्बोधन' के स्वर्ण जयंती वर्ष पर प्रसिद्ध कवि एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री राधेश्याम सरावगी मसूदिया को सम्मानित करते डॉ. महेन्द्र भानावत

तुम्हारा
विष्णुचन्द्र शर्मा

(7)

विष्णुचन्द्र शर्मा का दिल्ली से लिखा दिनांक 13 सितम्बर, 2002 का पत्र –

प्रिय भाई,

10.09.02 का पत्र मिला। एक बिल रमेश बुक स्टॉल, लंका, वाराणसी के नाम भेज दें। उसके बाद वह भुगतान करें। यह बिल

श्री लोलार्क द्विवेदी
सम्पादक आर्यकल्प
बी 2/ 143 ए, मदैनी, वाराणसी-1

के पते पर भेज दें। वह भुगतान कराकर भेज देंगे। श्री लोलार्क द्विवेदी को 'सम्बोधन' का वह अंक भी याद से भेज दें जिसमें 'काशी आज की' कहानी मेरा वक्तव्य आपने छापा है।

मैं फिर 17.09.2002 को बनारस जा रहा हूं। 23.09.2002 को चश्मा लेकर वापस आऊंगा। तभी साक्षात्कार के साथ महेश दर्पण तीन-चार रंगीन चित्र अलग-अलग भेज देंगे। अभी यहां तीन दिन से वर्षा में काम धाम ठप्प है। युवा कविता अंक प्रेस से मंगा नहीं सका हूं। शहरोज भाई कविताएं भी भेज रहे हैं। डॉ. (श्रीमती) शालिनी मिश्र ने 'समाज कार्य के क्षेत्र में संतों की भूमिका' पर मुझ से शांति निकेतन में बातचीत की थी। वह भेज रहा हूं।

तुम्हारा
विष्णुचन्द्र शर्मा

(8)

रजत कृष्ण का बाग बहरा से लिखा दिनांक 03 मार्च, 2004 का पत्र –

आदरणीय मेवाड़ीजी,

सादर नमस्कार।

आपका 22.2 का कार्ड मिला। एक दिन पहले ही आपका आलेख भी मिला था। उसके थोड़े दिन पूर्व 'सम्बोधन' का नया अंक पहुंचा था। सभी कुछ के लिए धन्यवाद। आपका आलेख 'पत्रों के आइने में विष्णुचन्द्र शर्मा' हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी है। आपके इस सहयोग से हमें बल मिला है। अंक में आपके आलेख से जान आ जाती है।

'सम्बोधन' का अंक अभी पूरी तरह नहीं पढ़ पाया हूं। इसी 19 तारीख से मेरी परीक्षा (हिन्दी साहित्य में एम.ए.) शुरू हो रही है जो 21 अप्रेल तक चलेगी। फिर आपको विस्तारपूर्वक लिखूंगा। यहां बाकी सब अच्छा है। आपके लिए शुभकामनाओं सहित-

आपका स्नेहाकांक्षी
रजत कृष्ण

(9)

भारत प्रसाद का शिलाँग से लिखा 05 फरवरी 2005 का पत्र –

आदरणीय महोदय,

'सम्बोधन' का दीपावली अंक प्राप्त हुआ। मुझे हार्दिक खेद है कि प्रतिक्रिया विलम्ब से भेज रहा हूं। इसे अन्यथा न लीजियेगा।

यह अंक हरिराम मीणा, गिरिराज किशोर व स्वयं प्रकाश जैसे प्रतिष्ठित रचनाकारों का सृजन-लाभ पाकर निश्चय ही सार्थक हो गया है। निरंजन सहाय का 'प्रेमचन्द की कीर्तिरक्षा' में लिखा गया लेख तर्क की ठोस जमीन पर खड़ा होकर शक्तिशाली हो उठा है- वैसे विषय ज्वलन्त था, मार्मिकता की आग और धधकायी जा सकती थी।

गिरिराज किशोर के साक्षात्कार ने अपने व्यक्तित्व के रचनात्मक संघर्ष का जैसा खुलासा किया है, वह नये उपन्यासकारों के लिए सीखने योग्य है।

आपका
भरत प्रसाद

(10)

डॉ. हरीश कुमार शर्मा का पासीघाट से लिखा दिनांक 6 मार्च 2005 का पत्र –

महोदय, नमस्कार,

'सम्बोधन' का जनवरी-मार्च 2005 का अंक मित्रवर डॉ. मधुसूदन शर्मा के यहां देखने को मिला। लघु कलेवर में तीखे तेवर वाली यह पत्रिका है। प्रगतिशील फैशन की झलक इसमें भी मिलती है जो कि आजकल हिन्दी में साहित्यकार-पत्रकार के रूप में प्रतिष्ठा पाने के लिए आवश्यक सा हो गया है किन्तु पिछले अंक में छपा स्वामी वाहिद काजमी का लेख आपकी खुली और उदार दृष्टि का परिचय देता है।

हां- पढ़ा था पिछले अंक में उसे भी और थोड़ा विस्मित भी हुआ था। इस अंक के आरम्भ में ही हमें नवल किशोरजी के पत्र से संकेत मिला कि आप उस लेख की काट खोज रहे हैं। यद्यपि स्वामीजी के पक्ष-विपक्ष में काफी प्रतिक्रियाएं प्रकाशित हैं। ठीक ही है, तर्काश्रित वाद-विवाद तो चलते रहने चाहिए। किसी को नीचा दिखाने या किसी को ऊंचा उठाने के लिए कुतर्क का सहारा लेने को मैं गलत मानता हूं।

इस दृष्टि से आपको कट्टरता या संकीर्णता के गलियारे से बाहर देख मन आश्वस्त होता है और 'सम्बोधन' में आशा जगती है।

इस अंक में हेतु भारद्वाजजी ने 'अहा' से 'हाय' तक की यात्रा तय कर आये आज के ग्रामजीवन को उसके यथार्थ रूप में प्रस्तुत कर दिया है। सुपाठ की सुगन्ध और कुपाठ के धुंए के साथ चल रहे प्रेमचन्द पर पुनर्विचार यज्ञ में चान्दीनी सिन्हा ने 'प्रेमचन्द की कहानियों में दलित मुद्दा' की अपनी छोटी किन्तु प्रभावी आहुती लगायी है।

डॉ. सूरज पालीवाल ने पत्रिका दर्पण में खरी-खरी कही है। अशोक गुप्ता की कहानी कुछ फार्मूलाबद्ध सी लगती है। 'शब्द अमर है' में मुशर्रफ आलम जौकी ने सर्वग्रासी इलेक्ट्रानिक मीडिया के खतरे और प्रिंट मीडिया की शक्ति और सम्भावना को ठीक ही रेखांकित किया है। रूपसिंह चन्देल के मार्फत पंजाबी की लेखिका अजीत कौर से मिलना सार्थक ही रहा। अन्य सारी सामग्री भी पठनीय है, स्तरीय है। बधाई और शुभकामना।

सादर आपका
हरीश कुमार शर्मा

स्मृतियों के शिखर (182) : डॉ. महेन्द्र भानावत

प्राचीन राजस्थानी साहित्य के खोजपंथी डॉ. मोतीलाल मेनारिया

क्या व्यक्तित्व और क्या कृतित्व; दोनों ही दृष्टि से डॉ. मोतीलाल मेनारिया ने अपनी एक अनूठी पहचान दी। राजस्थानी भाषा और साहित्य का जहां भी प्रसंग आएगा वहां डॉ. मेनारियाजी अवश्य स्मरण किए जायेंगे।

राजस्थानी भाषा, साहित्य, डिंगल, पिंगल आदि पर प्रारम्भ में डॉ. मेनारियाजी ने ही पहली बार लिखा और साहित्य के इतिहास में इसे प्रतिष्ठापित किया। उनकी भाषा, शैली विषय-प्रतिपादन और प्रस्तुतीकरण समस्त उस निथरे पानी की तरह है जिसके ठेठ पैंदे में पड़ी कोई चीज भी साफ-साफ दिखाई देती है। यश, लिप्सा, प्रसिद्धि, प्रशंसा से डॉ. मेनारियाजी सदैव दूर रहे। दूर ही नहीं रहे अपितु घर आई इस गंगा को भी कभी मन से स्वीकार नहीं किया।

किसी कवि या साहित्यकार पर मेनारियाजी ने पांच ही पंक्तियां लिखीं। उनका कहना था कि वह पांच पंक्तियों का ही अधिकारी है। छठी पंक्ति उस पर बनती ही नहीं। लिखें तो भी क्या लिखें और यदि किसी ने पचास पंक्तियां भी उस पर लिख दीं तो भी उसका निचोड़ ये पांच ही पंक्तियां होंगी।

ऐसी दमखम वाली बेबाक बात कहने वाला व्यक्ति डॉ. मेनारिया ही हो सकते हैं। उदयपुर में महाराणा कुम्भा द्वारा सन् 1448 में स्थापित सरस्वती भण्डार के सन् 1947 में वे सुपरिन्टेन्डेंट बने और महाराणा भूपालसिंहजी से कहकर इसे सबके लिए सर्व सुलभ बनाया। यहां रह कर उन्होंने अनगिनत हस्तलिखित ग्रन्थों का अध्ययन किया और कई अज्ञात रचनाकारों को ज्ञात कर रोशन किया।

मेनारियाजी के पूर्वज महाराणा प्रताप के राजत्वकाल में ऐतिहासिक स्थल चावण्ड से उदयपुर आ बसे। उनके पितामह गौरीशंकरजी इतिहास एवं काव्य के प्रेमी और विद्वान थे। मेनारियाजी को शोध-खोज की प्रेरणा प्रसिद्ध इतिहासज्ञ डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा से मिली। सन् 1958 में जब राजस्थान साहित्य अकादमी की स्थापना हुई तो वे उसके डायरेक्टर बना दिए गए जहां वे सन् 1962 तक बने रहे। यहीं मेरा उनसे परिचय हुआ।

यहां से सेवामुक्त होने के बाद पं. जनार्दनराय नागर ने उन्हें साहित्य संस्थान में सेवायें देने का बहुत आग्रह किया तो मेनारियाजी ने यही कहा कि सरकार किसी को रिटायर इसलिए करती है कि उसे विश्राम करना चाहिए।

यदि ऐसी स्थिति न हो तो सरकार ही क्यों मुझे सेवामुक्त करती परन्तु जन्नुभाई के आग्रह को वे टाल नहीं सके और प्रतिदिन तीन घण्टे साहित्य संस्थान में कुछ समय के लिए आते रहे। तब मुझे भी उनके सान्निध्य में वहां काम करने का सुयोग अवसर हाथ लगा जिसकी कई स्मृतियां मेरे जीवन की अनूठी उपलब्धियां बनी हुई हैं।

यहीं रह मैंने मेनारियाजी के निर्देशन में महाराणा जवानसिंह 'ब्रजराज' लिखित छिटपुट पद्यों का 'ब्रजराज काव्य-माधुरी' नाम से सम्पादन किया जिसका प्रकाशन महाराणा भगवतसिंह के अर्थ-सहयोग से 1966 में हुआ। यह मेरे द्वारा सम्पादित पहला प्रकाशन था।

यहां से प्रकाशित त्रैमासिक 'शोध पत्रिका' के सम्पादन में भी मुझे उनका पर्याप्त मार्गदर्शन मिला। इसके अतिरिक्त उनके निर्देशन में कहवाट सरवहिया अनन्तराय सांखला री वात, राजस्थान के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज भाग-5 तथा राणारासो का सम्पादन किया। यहीं श्रीकृष्णचन्द शर्मा के साथ राजसमंद की नौ चौकी पाल पर लगी 25 शिलाओं पर उत्कीर्ण राजप्रशस्ति नामक महाकाव्य का अध्ययन करते कागज पर इम्प्रेशंस लिए जो हमारे जीवन का रोमांचक और अद्‌भुत अनुभव रहा।

मेनारियाजी का लेखन सुगठ, सरल तथा स्पष्टता लिए था। उसकी खूबी विस्तारवादी नहीं हो छोटे-छोटे वाक्य और संक्षेप में कुछ ऐसा लिखना कि सारी बातें उसमें समाविष्ट हो जाँय। जहां तक हो, एक ही शब्द की बार-बार पुनरावृत्ति न हो। एक प्रसंग की सारी बातें एक जगह आ जाँय। किसी के सम्बन्ध में बहुत सारी बातें हों मगर लेखन में किस तरह कौन-सी बातों को किस ढंग से लिखा जाय ताकि पाठक को यह अहसास हो जाय कि और भी बहुत-सी बातें हैं जिनके सूत्र इनमें दिए गए हैं। इस तरह का लेखन मैंने उन्हीं से सीखा ।

डॉ. मेनारियाजी अपने हर काम में बड़े नियमित और उतने ही समय के पाबन्द थे। साहित्य संस्थान में जब भी वे तांगे से उतरते लोगबाग उन्हें देखते ही अपनी घड़ी मिला लेते थे। उनकी मृत्यु के कुछ दिनों पूर्व मैं जब डॉ. देव कोठारी के साथ उनसे मिलने उनके निवास गणगौर घाट स्थित बागोर की हवेली के पास पहुंचा तो उन्होंने सबसे पहली बात ही यही कही कि हम गलत समय उनके पास पहुंच गये हैं। यह समय दिन में दो बजे का था जब वे दाढ़ी बना रहे थे। उनका हर काम घड़ी की सुई के साथ समयबद्ध था।

सन् 1953 में 'राजस्थान का पिंगल साहित्य' विषय पर राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से पीएच.डी. की उपाधि मिली और 54 में उत्तरप्रदेश सरकार ने इस कृति को पुरस्कृत किया। राजस्थानी साहित्य की रूपरेखा, डिंगल में वीर रस, हाला झाला री कुण्डलियां, राजस्थानी भाषा और साहित्य, मानकवि कृत राजविलास, राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज उनकी प्रसिद्ध कृतियां हैं।

राजस्थान विद्यापीठ के कुल कुटुम्बियों की ओर से नागरजी ने मेनारियाजी की साहित्यिक एवं ऐतिहासिक सेवाओं के फलस्वरूप उनका अभिनन्दन कर 'साहित्य चूड़ामणि' सम्बोधन प्रदान किया तब भी कोट-पेंट और पगड़ीधारी डॉ. मेनारियाजी ना-ना ही करते रहे।

डॉ. मेनारियाजी से जब भी कोई व्यक्ति मिलने आता वे उससे पारिवारिक भाईचारे की बातें ही अधिक करते। उसके खानपान, रहन-सहन, जीवन-यापन आदि की बातों के उपरान्त यदि कुछ समय रह जाता तो वे मजबूर होकर साहित्यिक चर्चा करते अन्यथा वे इस वार्ता-चर्चा से परे ही रहते। उन्हें देखकर और उनसे मिलकर भी कोई उन्हें बहुत बड़ा साहित्यकार नहीं कह सकता था। यही उनके बहुत बड़े साहित्यकार होने का रहस्य था।

उन्होंने अपने लेखन में किसी बात को आग्रहपूर्वक नहीं लिखा। वे कहते भी थे कि शोधकर्मी को कोई बात इतनी आग्रह के साथ नहीं कहनी चाहिये कि स्थापना के स्थान पर आगे खोज का पथ ही बन्द हो जाय। खोज के पथ सदैव खुले रहें, यही उनका आग्रह रहता था। वस्तुत: वे खोजपंथी थे ।

उन्होंने अपने में बहुत बड़े होने का कभी कोई भ्रम नहीं पाला। बातचीत में भी उन्होंने कभी अपने साहित्यकार को प्रकट नहीं होने दिया। अपने सम्बन्ध में वे बहुत कम बातचीत करते थे और सामने वाले को ही प्रश्न-दर-प्रश्न कुरेदते रहते थे। यह भी उनके खोजी व्यक्तित्व का ही स्वभाव था। वे जीवन में जितने ईमानदार थे, अपने कार्य के प्रति, लेखन के प्रति भी उतने ही ईमानदार रहे। कभी उनके मन में यह बात नहीं आई कि वे राजस्थानी साहित्य के मान्य अध्येता के रूप में सारे देश में जाने जाँय।

साहित्य संस्थान में जब कोई उनसे मिलने आता, वे उसे कई तरह के सवालों से घेर लेते। चन्द उदाहरण-

आओ साब! कैसे आये?
ऐसे ही साब, आपसे मिलने।
हमसे मिलकर आपको क्या मिलेगा?
आपको बहुत पढ़ा है साब।
बहुत तो हमने लिखा ही नहीं तो आपने क्या पढ़ा होगा?
क्या आप कवि हैं?
हां साब टूटी-फूटी कविताएं लिखता हूं।
टूटी-फूटी क्यों लिखते हैं? साबत कब लिखेंगे?
आप नौकरी करते हैं?
हां साब।
कितनी पगार मिलती है?
पांच सौ रूपया।
क्या आप चाय पीते हैं?
हां साब।
दिन में कितने कप पी लेते हैं?
चार तो हो जाते हैं।
मित्रों के साथ भी तो कुछ खर्च करते होंगे?
हां साब, कुछ तो हो ही जाता है।
पान भी खाते हैं?
हां साब।
सिगरेट विगरेट तो नहीं पीते?
नहीं साब।
शादी शुदा हो?
हां साब।
कितने बालबच्चे हैं?
चार साब।
तो कुल छह प्राणी हुए।
हां साब।
माता-पिता भी तो होंगे?
हां साब।
कहां रहते हैं?
गांव में।
तो उनको भी कुछ तो भेजते ही होंगे?
हां साब।
तो फिर आप अपने परिवार को कैसे चलाते हैं?
भोजन में आपको क्या पसंद है?
फुलका और चावल।
मिठाई नहीं खाते हैं?
कभी-कभी साब।
दालों में कौनसी दाल ज्यादा चलती है?
उड़द की साब।
उड़द की दाल में कौनसा विटामिन होता है?
नहीं मालूम साब।
सुबह चाय पीते हो या दूध?
दूध-चाय दोनों।
व्यायाम करते हो?
नहीं साब।
घूमने जाते हो?
नहीं साब।

तब क्या साहित्य लिखते हो? साहित्यकार तो कहते हैं, कभी घर में टिकता ही नहीं है।

मैं समझता हूं ऐसे और इस प्रकार के सवाल भी एक खोज के सिलसिले वाले ही होते होंगे। वे तो कहते थे कि हम लोग तो शोधकर्मी हैं। किसी के सम्बन्ध में प्रश्न उठाना हमारा काम है। समाधान हमारे पास नहीं है। हम तो तथ्यों को जुटा कर उन्हें तरतीबवार रख देते हैं। इनमें क्या है क्या नहीं, यह विद्वान जानें।

डॉ. मेनारियाजी का जन्म 1 जुलाई, 1905 को हुआ था। इन्टर पास कर उदयपुर के भूपाल नोबल्स कॉलेज के विज्ञान विभाग में डिमोंस्ट्रेट बन गये। उनकी रुचियां बड़ी विचित्र थीं। दैनिक पत्रों में टाइम्स ऑफ इण्डिया तथा समाचारों की दृष्टि से बी. बी. सी. की खबरों को ही वे विश्वस्त मानते थे।

अपने पिताजी के मेनारियाजी बड़े भक्त थे। उनकी कही कोई बात कभी भी उन्होंने नहीं टाली। उनका विवाह छोटी उम्र में कर दिया गया था।

एक दिन वे अपनी पत्नी से कुछ बातें कर रहे थे। उनके पिताजी को यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने तत्काल मेनारियाजी को बुलाकर बुरी तरह डांटा (शायद पीटा भी) और कहा कि 'औरत से बात करने के लिए सारी रात पड़ी है। दिन को उससे बात करते हुए तुझे शर्म नहीं आती।' यह बात मेनारियाजी को ऐसी चुभी कि उन्होंने उसी दिन से अपनी पत्नी से नहीं बोलने का संकल्प कर लिया जिसका निर्वाह उन्होंने अन्त तक किया। पत्नी से बोलना तो दूर, उसकी तरफ कभी देखा तक नहीं।

उनका खानपान भी बड़ा नपा-तुला था। चार फुलके (चपातियां) तथा उड़द की दाल और छाछ उनका प्रतिदिन का भोजन था। बोलते भी बहुत कम थे। हमेशा दूसरों की बात सुनने में और रस लेने में रहते थे। उनकी हस्तलिपि अच्छी नहीं थी। लिखते समय उन्हें बड़ा जोर लगाना पड़ता था इसीलिए उनकी पेन की नीब बहुत कम चलती थी। वे प्राय: पेन्सिल से ही लिखते थे। अधिकतर वे स्वयं नहीं लिखकर लिखवाते थे। उनकी हस्तलिपि के कुछ पत्रे मेरे पास भी सुरक्षित किए हुए हैं।

दिन-रात का सारा समय उनका बन्धा हुआ रहता था। जिस समय जो काम उन्हें करना होता वे वही कार्य करते। समय से अधिक तो वे अपने दफ्तर में भी नहीं बैठते। कई बार अकादमी में किसी बड़े अधिकारी या अन्य व्यक्ति की पांच बजे के बाद आने की सूचना आती तो वे यही कहते कि 'यह कागज ही गलत आया है।

भेजने वाले को मालूम है कि 5 बजे दफ्तर बन्द हो जाता है फिर वे 6 बजे कैसे आयेंगे?' ऐसी घटनायें भी घटीं जब शिक्षा अधिकारी 5 बजे के बाद अकादमी का निरीक्षण करने आये पर मेनारियाजी का मिलना नहीं हुआ और उनकी जगह ताला ही लगा पाया।

रात्रि को उनकी महफिल सूरजपोल अस्थल मन्दिर के पास हितैषी पुस्तक भण्डार के वहां जुड़ती जहां पं. नागर, भवानीशंकर ज्योतिषी जैसे उनके हमझोली दोस्तों के साथ अनेक तरह की हंसी-मसखरी की बातों का रंग जमता। उनके साथ हर समय काला छाता रहता था जो उनकी अतिरिक्त पहचान बना रहा।

वे 10 बजे करीब सो जाते। कभी तार या कोई जरुरी चिट्ठी भी उन्हें मिल जाती तो वे उसे अपने तकिये के नीचे रख देते और सुबह पढ़ने का समय होने पर ही पढ़ते। वे कहते भी कि रात तो सोने के लिये है। मैं व्यर्थ ही किसी तार- चिट्ठी को पढ़कर अपना समय बर्बाद क्यूं करूं। सुबह होगा सो देखा जायगा।

डॉ. मेनारियाजी की अधिकांश पुस्तकें हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से छपीं। राजस्थानी भाषा और साहित्य पुस्तक का जब नया संस्करण आया तो डॉ. देव कोठारी के हाथ उसकी एक प्रति उन्होंने मेरे पास भिजवाते कहलवाया कि इन दिनों मुझसे कुछ भी लिखा नहीं जा रहा है इसलिए भेंट जैसी बात नहीं लिखी गई है। 21 जुलाई, 1979 को उनका निधन हुआ।

निधन पूर्व जब मैं उनके निवास पर मिलने पहुंचा तब वे सुधहीन जमीन पर लेटे हुए थे। उनके पास गमगीन माहौल में उनके परिवार वाले बैठे हुए थे। अचानक वे बड़बड़ाते बोले, 'आवो आपां वात करां' और अन्तिम स्वांस ले ली। मैं समझ गया, अपनी पत्नी से जीवनपर्यन्त सम्वादहीन बने रहने का पश्चाताप ही उन्हें सालता रहा जो अन्त में उनकी मृत्यु का दुखद पक्ष बना।

खुल्लम-खुल्ला

महेन्द्रजी भानावात शब्द रंजन में दी दो, होली री वय्यो-कुय्यो।
बधायां आपने अणी में माणे जस्या ने भी, खुल्लम-खुल्ला पूछ्यो।।
महेन्द्रजी और तुक्तकजी रे वाते मैं भी लिख्यो, जस्यो मैं भांप्यो।
म्हारो लिखणो हाऊ कर दी दो आप, जो खुल्लम-खुल्ला छाप्यो।।

- भूपेन्द्रकुमार चौबीसा

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 15 अप्रेल 2024

सम्पादकीय

टोटकों की बहार

होली से लेकर गणगौर तक के एक पखवाड़े में ग्रामीणजनों में अनेक अनोखे टोटके-टोटकी देखने को मिलते हैं। इन भिन्न विचित्र टोटकों में बालकों से लेकर महिला-पुरुष उन्मुक्त मन से तबीयत खोलते जो कुछ भी मनानन्दपरक कार्य करते हैं वे अन्तस में गहरे उतरे भावों एवं मनोभावों के कामदेव को जगाते लगते हैं।

सामूहिक उत्सवजनित लोकानुरंजन पूरे गांव तथा आसपास के वातावरण को खुशहाल बनाने, वर्षभर विपरीत वृत्तियों, हवाओं तथा पैशाचिक शक्तियों के दमन के प्रतीक होते हैं। गांव का कण-कण और जन-जन इसमें भाग लेता अपनी साक्षी देता है।

हम शहरी लोगों के लिए ये टोटके हास्यास्पद हो सकते हैं किन्तु ग्रामीणजनों के लिए अखण्ड आस्था, विश्वास और खुशहाली के सबब होते हैं। घास भैरू की सवारी में एक बड़ा पत्थर जो प्राय: किसी से बमुश्किल ही हिल सकता है उसे रस्सों से बांधकर दो-दो बैलों की सहायता से घसीटी दिलाते पूरे गांव के गली-मोहल्लों में घुमाया जाता है। इसमें भावना यह रहती है कि घास भैरू पूरे गांव की रक्षा करते सबकी दशा और दिशा को मनोरम बनाये रखें।

वर्ष में एक ही बार तो उस पत्थरनुमा घास भैरू को सिन्दूर मालीपना से साक्षात् भैरूजनित मानव-सा सबको मनभावन कर देने वाला आकृति-पुरुष-सा नव्य-भव्य स्वरूप दिया जाता है। भाव यह भी है कि ग्राम्य प्रकृति का हर कण ऊर्जावान बने। हर फसल दूनी डेढ़ी पैदावार लिए निखरे।

रात्रि के सन्नाटे में जब सब गहरी नींद में सोये मिलते हैं तब महिलाएं नंगधड़ंग हो जुलूस रूप में अनेक मनोविकारों को बीड़ी की धुंआ की तरह बाहर निकाल पवित्रता का वातावरण छोड़ती हैं।

नेजा में खजूर की ऊंची टोंच पर एक गठरी लटका दी जाती है। उसके चारों ओर महिलाएं अपने हाथों में कोड़े लिए सजग खड़ी रहती हैं। पुरुष वर्ग एक-एक कर खजूर पर चढ़कर इस नेजे को गिराने का प्रयत्न करता है और महिलाएं उसे कोड़ों से पीटती हुई उसे नाकाम सिद्ध करने में जुटी रहती हैं। एक तो खजूर वृक्ष पर वैसे भी कोई बिरला ही चढ़ने की हिम्मत कर सकता है। दूसरा कोड़ों की मार इतनी जबर्दस्त लगती है कि बमुश्किल ही कोई पुरुष अपनी हिम्मत दिखा सकता है।

कहीं कण्डों से होली खेली जाती है तो कहीं पत्थर से एक-दूसरे पर वार किया जाता है। छड़ियों-डंडियों तथा लकड़ियों से गैर तो जगह-जगह रमी जाती है पर तलवारों से गैर खेलने वाले बांके वीर इतिहास के उन प्राचीन घटनाचक्रों की याद संजोये रहते हैं जब मुगलों के खतरनाक आक्रमण का गांव वालों ने बड़ी बहादुरी से सामना कर उन्हें बुरी तरह खदेड़ दिया था।

इन सारे सन्दर्भों में मात्र टोटकों की बू ही नहीं मिलती बल्कि लुप्त हुए इतिहास को भी सच्चाई के साथ खोजा जा सकता है। गांव वाले अपनी परम्पराओं का आस्थामूलक निर्वाह करते हैं जबकि शहरी पढ़ेलिखे या तो उन्हें नकारने में लगे हैं या हास्यास्पद समझ उनकी तह तक जाकर खोज खबर से पल्ला झाड़ते हैं।

यही नहीं, कहीं दो लड़कों की आपस में शादी होने का स्वांग रचाया जाता है तो कहीं एक जीवित युवक की अर्थी निकाली जाने का टोटका किया जाता है। इन सबका उद्देश्य यही है कि मानव जीवन तथा उससे जुड़े समस्त कार्य-व्यापार स्वस्थ गति-मति से चलते रहें।

पोथीखाना

'दास की यादों में प्रसाद'

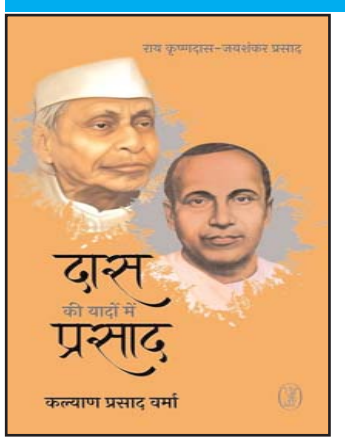

डॉ. कल्याण प्रसाद वर्मा ने 'दास की यादों में प्रसाद' नामक महत्वपूर्ण पुस्तक को रोचक तरीके से लिपिबद्ध किया है। पुस्तक में कुल ग्यारह अध्याय हैं। पहले अध्याय में राय कृष्णदासजी तथा दूसरे अध्याय में जयशंकर प्रसादजी के जीवन, साहित्य और व्यक्तित्व के बारे में विस्तार से परिचय दिया गया है। इसके बाद नौ शृंखलाओं में ये यादें लिखी गयी हैं।

पुस्तक को पढते हुए जैसे-जैसे आगे बढते हैं, वर्माजी के कठोर परिश्रम को नमन करने की इच्छा बलवती हो जाती है। साप्ताहिक हिंदुस्तान, धर्मयुग, कादम्बिनी, नवनीत आदि पत्रिकाओं के पुराने अंकों से इस सामग्री का संचयन उन्होंने उसी प्रकार किया है जिस प्रकार मधुमक्खी विभिन्न फूलों से मधु का करती है। रोचकता ऐसी है कि पाठक पुस्तक को आदि से अंत तक बस पढ़ता ही चला जाता है। प्रसादजी की यादों के मंतव्य को प्रकट करते हुए राय कृष्णदासजी ने लिखा, '' सन् 1903 से प्रसादजी के अवसान तक मैंने उन्हें निकट से निकट तक निरखा-परखा है। उनके अंतस में पैठा हूं। उनके हृदय का कोना-कोना मेरे लिए उन्मुक्त था। लगता है, वे राय कृष्णदास के अंतस में पैठकर ही इसे लिख रहे थे।

प्रथम अध्याय में 'राय कृष्णदास : जीवन, साहित्य और व्यक्तित्व' का विस्तार से विवेचन है। भारत कला भवन की स्थापना और कला कृतियों, मूर्तियों, पांडुलिपियों के संग्रह से संबंधित अनेक रोचक संस्मरणों का समावेश वर्मा जी ने किया है।

दूसरे अध्याय में 'जयशंकर प्रसाद : जीवन, साहित्य और व्यक्तित्व' का विशद वर्णन है। इस अध्याय में एक जगह राय साहब अपनी राय देते हैं कि प्रसादजी स्वयंभू शिखर हैं। वे बिना सहायता के फूटे थे और बिना सहायता से बढे थे। इसी अध्याय के पृ. सं. 39 पर पं. सूर्यनारायण व्यास के अभिमत का उल्लेख है- 'प्रसादजी का कवि-हृदय कोमलता-मार्दव व सुकुमारता से आप्लावित था। आप दुखों की विसंगतियों से गुजर चुके थे यानी पिता का देहावसान, अग्रज का निधन, पहली तथा दूसरी पत्नी का बिछोह, न्यायालयी विवाद आदि आदि...।'

तीसरे से ग्यारहवें अध्याय तक राय कृष्णदास की यादों में प्रसाद जी की नौ कड़ियां प्रस्तुत की गयी हैं। प्रत्येक कड़ी को वर्माजी ने कालखंड के अनुसार बड़े करीने से पुस्तक में पिरोया है। वाणी प्रकाशन से प्रकाशित 157 पृष्ठों की इस किताब में गागर में सागर भर दिया है।

- प्रभाशंकर उपाध्याय

बहते पानी की तरह लिखता हुआ लेखक अच्छा लगता है : गौरीकांत शर्मा

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व सचिव और साहित्यकार लक्ष्मीनारायण नंदवाना की पुस्तक 'स्मृतियों की सुगंध' का 04 अप्रेल को कस्तूरबा मातृ मंदिर परिसर में एक सादे समारोह में विमोचन हुआ। नंदवाना ने अपनी इस पुस्तक में देश-प्रदेश के प्रसिद्ध 33 साहित्यकार, पत्रकार और संस्कृतिकर्मी व्यक्तित्वों से जुड़े संस्मरणों को प्रस्तुत किया है। इनमें पंडित हरिभाऊ उपाध्याय, निरंजननाथ आचार्य, पंडित झाबरमल शर्मा, प्रभाष जोशी इत्यादि चिंतकों-पत्रकारों के अलावा प्रसिद्ध साहित्यकार पन्नालाल पटेल, डॉ. नामवर सिंह, रमेश कुंतल मेघ, हरीश भादानी, मन्नू भंडारी, अज्ञेय तथा यादवेंद्र शर्मा चंद्र आदि सम्मिलित हैं।

विमोचन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत ने अपने सम्बोधन में कहा कि संस्मरणों में लेखक अपने वैयक्तिक अनुभवों को अतीत के सजीव चित्रण के साथ इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि पाठक स्वयं को उस संस्मरण से जोड़ लेता है। संस्मरण में संबंधित व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को सहजता और आत्मीयता के साथ रेखांकन किया जाता है कि यह इतिहास के निकट होकर भी इतिहास नहीं होता।

विशिष्ट अतिथि कवि एवं लेखक डॉ. जेपी भाटी 'नीरव' ने कहा कि साहित्य अकादमी के सचिव पद पर कार्यकाल के दौरान नंदवाना का साहित्य, संस्कृति व लेखन के क्षेत्र के कई बड़े नामों से सम्पर्क रहा। उनमें से प्रमुख व्यक्तित्वों के साथ बिताये समय को उन्होंने सहज और पठनीय भाषा में प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक के माध्यम से आने वाली पीढ़ी को अतीत के इन बड़े व्यक्तित्वों के बारे में जानने का अवसर मिलेगा।

लेखक व मोटिवेशनल स्पीकर रमेशचंद्र भट्ट ने कहा कि नंदवाना मिलनसार स्वभाव के होने से वे दूसरों को सहज ही आकर्षित कर अपना बना लेते हैं। इतने बड़े लेखकों के साथ जुड़ी स्मृतियों को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत कर उन्होंने प्रेरणादायी कार्य किया है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहानीकार गौरीकांत शर्मा ने कहा कि जिस प्रकार बहता हुआ पानी अच्छा लगता है उसी प्रकार लिखता हुआ लेखक अच्छा लगता है। नंदवाना का सतत लेखन इस बात का सबूत है कि वे निरंतर सृजनशील हैं और नई पीढी के लेखकों के लिए मार्गदर्शन का कार्य कर रहे हैं।

लेखक लक्ष्मीनारायण नंदवाना ने कहा कि हिंदी साहित्य में संस्मरण और रेखाचित्र सदैव हाशिए पर रखे गए हैं। हालांकि महादेवी वर्मा, जैनेंद्र, अज्ञेय, रामवृक्ष बेनीपुरी जैसे हिंदी साहित्य के दिग्गज लेखकों ने इस दिशा में काफी कार्य किया है लेकिन वर्तमान में संस्मरण विधा को फिर से आगे लाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

चेत सके तो चेत

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' -

चैत्र में चैतन्य हो जाती है शंखपुष्पी। महीन - महीन हरित अंगुलीदार पत्तियों के डंठलों पर मोती जड़ी अंगूठी जैसे फूल और उनके कर्णगत पंडुराए पुंकेशर। सफेद वर्ण में इतनी अनूठी सुरभि और सौंदर्य कि छापर भी मोती निपजाने वाला खेत लगता है। मुंह अंधेरे ही फूल खिल जाते हैं और फिर चढ़ते सूरज की होड़ करते हुए पत्तियों से ऊपर उठ जाते हैं।

चैत्र की दस्तक गिरते पलाश और झड़ते सेमल के बीच फलती शंखपुष्पी बताती है। उसने कहां पंचांग देखा? उसका चेत जाना कैसे चैत्र कहलाया!

भौंरों की आंखों के काले बिंदु इन फूलों पर स्थिर हो जाते हैं और फिर वे अपने छहों पांवों का बल लगाकर चैत्र के रस पान से अपनी चेतना को पुनर्जीवित करते हैं। चींटियां भी पीछे नहीं रहतीं। पत्तियों पर डग भरती हैं और आती जाती हुई फुसफुसाती हैं - रस कोशिकाएं रास आ रही हैं।

पिपीलिकाओं को भी अपनी स्मृति को बढ़ाना होता है और मौसम का ज्ञान बचाना होता है। बिसाखी तितलियां अपने शिशुओं की फौज के साथ इन फूलों के खेत की मेहमान बन जाती हैं और जी भरकर रसोत्सव मनाती हैं। झूमती हैं और छक-

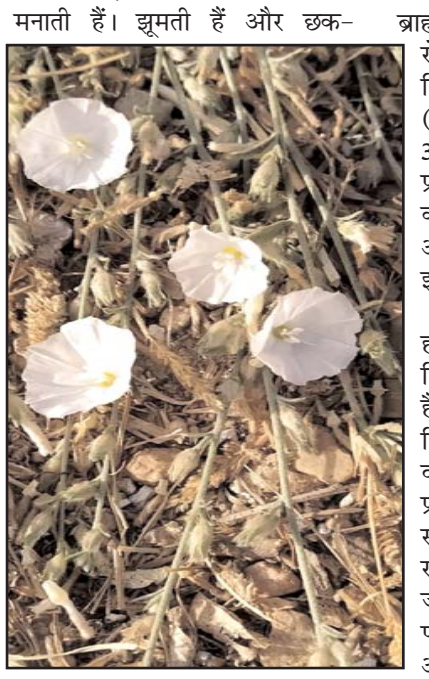

छककर इतराती हैं। वे पड़ोसी तक को इस आनंद की भनक नहीं लगने देती और पारिवारिक पर्व के मजे लूटती हैं।

इस प्रसंग में विचार किया जा सकता है - चित्र नामानं करोति... सर्वाणिहि चित्राणि अग्नि:। (शतपथ ब्राह्मण 6, 1, 3) चित्राणि साकं दिवि रोचनानि (अथर्व 19, 7, 1) और, चित्रं देवानां उद् अगाद् अनीकं (ऋक् 1, 115, 1, अथर्वेद 13, 2, 35; वाजसनेयी. 7, 42) विविध प्रकार की सृष्टि या संवत्सर चक्र का आरम्भ माना गया है। यह मेध्य औषधी है और शिरः भागके रोगोमें इसका योग प्रयोग उपयोगी है।

कुदरत ने शंखपुष्पी को हमारी चेतना के वरदान के रूप में दिया है। एक खांखाहोली नाम भी है। भौंरों और कीटों ने यह सब किस किताब में पढ़ा? लेकिन वनवासियों को सबसे पहला इसका प्रत्यक्ष ज्ञान हुआ। उन्होंने लंबे समय तक अपनी स्मृति में बनाए रखा और उनसे अनेक ऋषियों ने जाना। महर्षि पुनर्वसु ने बड़े चाव से फूलों सहित इन पौधों को पीसा और मिरच, इक्षुरस की कुछ बूंदें डालकर पिया। फिर, संसार के हित में अपना अनुभव लिखा - शंख जैसे छोटे-छोटे पुष्प! नहीं-नहीं, पुष्पियां हैं। बिना जल के फलती हैं और स्मृति व चेतना को बनाए रखती हैं।

दु:ख तो है सुख कहां ?

ऐ 'सुख' तू कहाँ मिलता है
क्या तेरा कोई स्थायी पता है
क्यों बन बैठा है अन्जाना
आखिर क्या है तेरा ठिकाना।
कहाँ-कहाँ ढूंढा तुझको
पर तू न कहीं मिला मुझको
ढूंढा ऊँचे मकानों. में
बड़ी बड़ी दुकानों में
स्वादिस्ट पकवानों में
चोटी के धनवानों में
वो भी तुझको ढूंढ रहे थे
बल्कि मुझको ही पूछ रहे थे
क्या आपको कुछ पता है
ये सुख आखिर कहाँ रहता है?
मेरे पास तो 'दु:ख' का पता था
जो सुबह शाम अक्सर मिलता था
परेशान होके रपट लिखवाई
पर ये कोशिश भी काम न आई
उम्र अब ढलान पे है
हौसले थकान पे है
हाँ उसकी. तस्वीर है मेरे पास
अब भी बची हुई है आस
मैं भी हार नही मानूंगा
सुख के रहस्य को जानूंगा
बचपन में मिला करता था
मेरे साथ रहा करता था
पर जबसे मैं बड़ा हो गया
मेरा सुख मुझसे जुदा हो गया।
मैं फिर भी नहीं हुआ हताश
जारी रखी उसकी तलाश
एक दिन जब आवाज ये आई
क्या मुझको ढूंढ रहा है भाई
मैं तेरे अन्दर छुपा हुआ हूँ
तेरे ही घर में बसा हुआ हूँ
मेरा नहीं है कुछ भी 'मोल'
सिक्कों में मुझको न तोल
मैं बच्चों की मुस्कानों में हूँ
हारमोनियम की तानों में हूँ
पत्नी के साथ चाय पीने में
'परिवार' के संग जीने में
माँ बाप के आशीर्वाद में
रसोई घर के पफवानों में
बच्चों की सफलता में हूँ
माँ की निश्छल ममता में हूँ
हर पल तेरे संग रहता हूँ
और अक्सर तुझसे कहता हूँ
मैं तो हूँ बस एक 'अहसास'
बंद कर दे तू मेरी तलाश
जो मिला उसी में कर 'संतोष'
आज को जी ले कल की न सोच
कल के लिए आज को न खोना
मेरे लिए कभी दुखी न होना।

- गणेश डूंगरवाल

यात्रा गिरनार की

गिरनार की चढ़ाई भक्ति मन की चढ़ाई है । धर्म प्रौर अध्यात्म की चढ़ाई है। तपते मन और श्रद्धालु जन की चढ़ाई है। इस चढ़ाई में बूढ़े थके मांदे भी चढ़ते हैं और जवान उम्र के प्रौढ़ पके लोग भी चढ़ते हैं। यह तपा हुआ पहाड़ सबके हाड़ को तेजी तरी एवं ताजगी देता है तथा हिये को काठा करता है। गिरस्थी के झंझटों से मुक्त होने एवं संसार सागर से परे होने यहां जो भी आता है उसका मन सारी मलिनताओं से ऊपर उठ चंगा हल्का और पवित्र हो जाता है। यह चढ़ाई सुबह चार बजे से ही प्रारंभ हो जाती है। गिरनार की यात्रा हमारे सांसारिक मन की दिव्य विभूति है। आत्मचैतन्य को उजास देकर नर से नारायण बनने की पावन प्रक्रिया है। जन को वन के वैभव के साथ जोड़ने की स्तुति-कामना है और तप-खप कर भूत से भभूत बनने की मंत्र-सिद्धि है।

हमारे यहां यों तो कई गिर हैं मगर मुख्य गिर दो ही हैं। पहला हिमगिर और दूसरा गिरनार। एक पहाड़ों का नर रूप है तो दूसरा नार रूप। नर-नारी का यह रूप नदी-नालों और गिरि कन्दराजों में भी शाश्वत सनातन है ।

गिरनार का पूरा पहाड़ गुफाओं का गहन तपस्या स्थल है। कोई गुफा ऐसी नहीं मिलेगी जहां कोई यशस्वी, मनस्वी, तपस्वी साधु-सन्यासी नहीं तपा हो। कई अघोरी, कई नागा, कई निर्वाणी अभी भी यहां तपस्या रत हैं। एक अनुमान के अनुसार अब तक यहां 88 हजार साधु तपस्या कर चुके हैं।

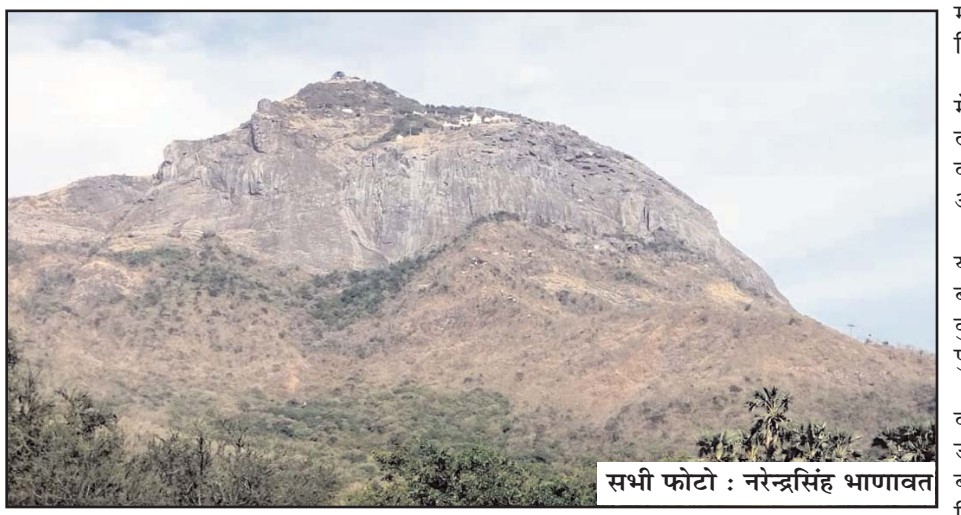

सभी फोटो : नरेन्द्रसिंह भाणावत

गिरनार की चढ़ाई भक्ति मन की चढ़ाई है । धर्म प्रौर अध्यात्म की चढ़ाई है। तपते मन और श्रद्धालु जन की चढ़ाई है। इस चढ़ाई में बूढ़े थके मांदे भी चढ़ते हैं और जवान उम्र के प्रौढ़ पके लोग भी चढ़ते हैं। यह तपा हुआ पहाड़ सबके हाड़ को तेजी तरी एवं ताजगी देता है तथा हिये को काठा करता है। गिरस्थी के झंझटों से मुक्त होने एवं संसार सागर से परे होने यहां जो भी आता है उसका मन सारी मलिनताओं से ऊपर उठ चंगा हल्का और पवित्र हो जाता है। यह चढ़ाई सुबह चार बजे से ही प्रारंभ हो जाती है।

21 मई 1985 को हमने भी यह चढ़ाई चढ़ी। इस चढ़ाई में लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ के सेवक सरजुदासजी वैष्णव, डॉ. सुधा गुप्ता और आत्मज मुक्तक थे। दरअसल यह हमारी मीरां विषयक शोधयात्रा थी जो कल्लाजी की दिव्यात्मा ने सरजुदासजी के माध्यम से कराई थी। इसीलिए हम अनेक अदृश्य जगत को खोज पाये। हमारी चढ़ाई एकमात्र सीढ़ियों की चढ़ाई न होकर सब तरह की खोज की चढ़ाई थी इसलिए सुबह पांच बजे चढ़ाई शुरू कर संध्या सात बजे उतर पाये। अगल बगल की चट्टानों वृक्षों झाड़ियों का भी सान्निध्य लिया और बहुत कुछ वह देखा जिसे सामान्यत: दूसरे नहीं देख पाते।

गिरनार का प्रत्येक पहाड़ पोला है। गुफा है। तपन का आत्म चैतन्य और काया की कंचन हुई भस्म राख है। यहां दत्तात्रेय, भतृहरि और गोरखनाथ ही नहीं तपे, शिवजी-दधीचि जैसे तप:पूतों को भी यह जपतप भूमि रही है। यह तपन आज भी जारी है। पचास बरस से लेकर ग्यारह सौ बरस तक के अनेक साधु अज्ञात बने अलख आनन्द में आकण्ठ डूबे हैं। मानव-भेख में कई गोरखनाथ, गोपीचन्द अपनी लीला लहर में आठूं प्रहर यहां अबोले थबोले घूम रहे हैं पर कौन उन्हें जान-पहचान पाता है!

कोई ग्यारह बजे होंगे, हम चाय की एक दुकानड़ी (थड़ी) के पीछे की चट्टानों पर जा बैठे। वहां गूलर का एक घना वृक्ष था। कहीं-कहीं चट्टानों पर बारीक दूब के मखमली गद्देदार थप्पे जमे हुए थे। कुछ ऐसी चट्टानें भी थीं जिनसे शहद जैसा पदार्थ रिस रहा था। यह दूब पत्थरचट्टी कहलाती है और शहद सा रिसता पदार्थ शिलाजीत है। बन्दर इसे बखूबी समझता है। जहां ऐसी शिलाएं होंगी वहां बन्दरों की तादाद अधिक होगी।

चाय की थड़ी वाला मात्र चाय ही नहीं बना रहा था। वहां विश्राम कर थकान उतारने वालों को अपने ज्ञान-कोश से तरी दे रहा था। हम तो उससे बतियाकर जैसे निहाल ही हो गये। वह अद्‌भुत व्यक्ति था। लगा चाय के माध्यम से वह भी कोई देव-पुरुष ही था।

वृक्षों की बात चली तो उसने बताया कि मोटे रूप में दो प्रकार के वृक्ष माने गये हैं। प्रथम वे जो न फल देते हैं और न पुष्प यानी फूल। ऐसे वृक्ष वनस्पति की गिनती में शुमार हैं। द्वितीय ऐसे वृक्ष जिनमें पहले पुष्प लगते हैं फिर फल। ये वृक्ष वानस्पत्य: की श्रेणी लिये होते हैं। इनमें आम जैसे वृक्ष हैं। गूलर फूलों के बिना ही फल देने वाला वृक्ष है। आप गूलर के नीचे ही बैठे हैं। उसकी बातचीत का निष्कर्ष था कि सम्पूर्ण वृक्ष जगत को छह वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। हमारी दिलचस्पी बढ़ती गई। वह अपना ज्ञान-पिटारा खोल गिनाता रहा-

(1) बिना मौर (मोड़) आये फलने वाले गूलर, बड़, पीपल।

(2) फलों के पक जाने पर नष्ट होने वाले धान, गेहूं, चना।

(3) बिना किसी आश्रय के बढ़ने वाले लता आदि।

(4) कठोर छाल वाले बांस आदि।

(5) पृथ्वी पर फैलती चलती बेलें वाले खरबूजा, तरबूज।

(6) पहले फूल फिर वे ही फूल फल रूप में बदलने वाले जैसे जामुन।

यहां अनेक ऐसे वृक्ष मिले जिनके सहारे बेलें लिपटी हुई थीं। इन्हें देख याद आई एम. ए. के दौरान अपभ्रंश की पुस्तक की वह पंक्ति- 'वच्छ विलूमे वेलड़ी नरा विलूमे नार' अर्थात जैसे वृक्ष के बेल लिपटती है वैसे मनुष्य के नारी। याद आया, बचपन में जब अति लाड़ में हम मां के लिपट जाते तो वह कहती, ऐसे जोर से विलूमने पर मेरे गिर जाने का भय है। कहां अपभ्रंश का विलूम और कहां मेवाड़ी का बोलचाल का विलूम। भाषागत शब्द-सौन्दर्य का अध्ययन भी जितना अजूबा है उतना ही रहस्य की परतें खालने वाला है।

बन्दर तो वहां कदम-कदम पर हैं। उस समय हमारी बैठणी में भी तीन-चार बन्दर आ घमके थे। पत्थरचट्टी शिलाजीत और शहद तीनों को मिलाकर बन्दर लड्डू बनाता है और अपनी जच्चा बंदरी को खिलाता है। गूलर का वृक्ष घना फैला था। उसके फूल का महत्त्व मैंने कई जगह सुना।

शरद पूनम की रात को ऐन बारह बजे यह फूल खिलता है तब पूरे वृक्ष की जिस-जिस डाल पर जहां-जहां चलता है, वहां-वहां, वहीं-वहीं फल लगते हैं। यदि उस वक्त वह फूल किसी के हाथ पड़ जाता है तो उससे मनवांछित फल प्राप्त किया जा सकता है। पत्थरचट्टी चट्टानें भी वहीं होंगी जहां गूलर का वृक्ष होगा।

गूलर की इस चर्चा में मेरा ध्यान छठी कक्षा में पढ़ी राष्ट्रकवि

मैथिलीशरण गुप्त की उस कविता-पंक्ति पर चला गया जिसका अर्थ तब गुरुजी पूरा नहीं खोल पाये थे। लगभग 35 बरस बाद उस पंक्ति का यहां अर्थ पाकर मैं अपने गूढ़ मन में इतना चकित छिकत हुआ कि कुछ कहते नहीं बना। वह पंक्ति थी-'हां-हां जनाब तब तो गूलर भी फूल देगा।'

गिरनार के चढ़ाव में हमारे कई पड़ाव रहे। कई मन्दिर-मन्दरियां, देवी-देवता, साधु संत मिले। असंत-असाधु भी मिले। ठगी-पाखण्डी भी मिले।

अम्बामाता का मन्दिर बड़ा ही पावन सुखद लगा। मूर्ति में बड़ी शक्ति। बड़ा दिव्य रूप। यहां भक्ति और शक्ति दोनों मिलती है। मां कई भेख में सबके मध्य विचरती है। वह सबको जान पाती है। उसे कोई नहीं जान पाता। अजूबे और भी कई मिले। सबके सब तो कहने के भी नहीं होते।

दत्तात्रेय से लौटते समय कुछ लोगों ने हमें बताया कि यहीं पहाड़ों में एक ऐसे अघोरी बाबा हैं जो अपना भेख बदलते रहते हैं। वे शेर चीता बनकर भी घूमते हैं। गोमुख कुण्ड के पास वाली कुटिया में भी मिल जाते हैं। बहुत पुराने जीव हैं। मिल जायें तो बड़ा भाग्य।

यह कुटिया तो हमने चढ़ते समय भी देखी थी। थड़ी वाले ने इशारा कर बताया था पर तब इसमें कोई नहीं था। ऊपर से लौटते वक्त हम अपनी उत्सुकता शान्त करने उधर बढ़े। देखा तो भीतरी ओर एक पाटे पर बाबा लेटा दिखाई दिया, जो कुछ अबोले अदृश्य संकेत ले-दे रहा था। जैसा उसका जला- अधजला बिछौना था, वैसा ही उसका जला-अधजला शरीर था। गले में हड्डियों की माला। पांवों में चांदी की मकोड़े वाली चैन।

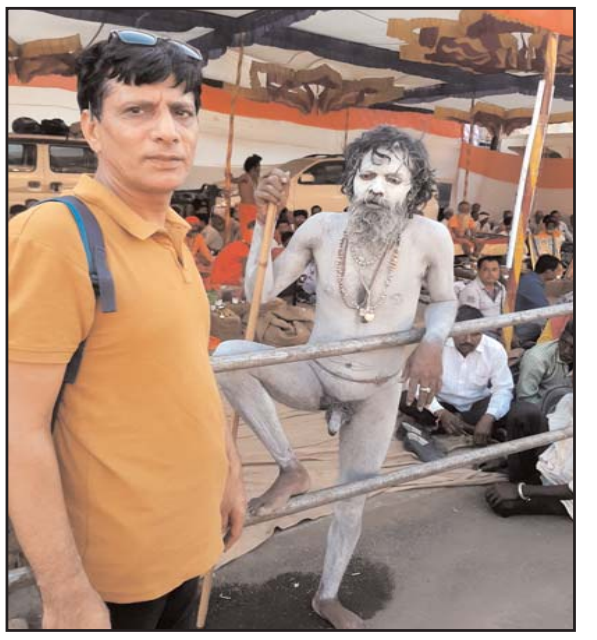

हम चुपचाप वहां जाकर उस कुटिया से जुड़ी कुटिया में मौन स्तब्ध बैठ गये। थोड़ी देर बाद बाबा ने हमारी ओर आंखें फेरी और कहा- 'राणाजी के देश से आये हो। मीरां भी आई थी। शिव मेले में मिली थी।' मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा पर उस संत ने बहुत कुछ इशारे में कह दिया। यह कह फिर वह कहीं खोगया। हवा में उंगलियां देता रहा। न जाने किसको क्या कहता रहा। कोई नहीं था वहां। बाबा के रहस्य चमत्कार में खोये हम अजीब भय से डरते भी जा रहे थे और उसे देवपुरूष मानते हुए आनन्द के ऊहापोह को भी जी रहे थे। सेवकजी ने बताया कि यह कोई पहुंचा हुआ संत है। आप लोग मिल पाये, देख पाये। इसे अपना सौभाग्य मानो।

नीचे तलहटी में जाकर देखा दो कुण्ड बहुत प्रसिद्ध हैं। एक तो दामोदर कुण्ड जिसमें गिरनार की चढ़ाई से पूर्व सभी नहाते हैं और दूसरा मिरगी कुण्ड जो शिवरात्रि को ही स्नान के लिए खोला जाता है। दामोदर कुण्ड में, प्रारम्भ में सभी प्रमुख नदियों व समुद्रों का पानी लाकर डाला गया था।

मिरगी कुण्ड में केवल वे ही साधु नहाते हैं जो तपस्या में लीन हैं। साध्वियों-संताणियों के लिए यहां स्नान करना वर्जित है। बहुत पहले यह कुण्ड मात्र एक नाला था जिसमें सभी लोग नहाते थे। एकबार इसमें एक रजस्वला नारी नहा गई। इस पर एक संत ने उसे मिरगी बनने का श्राप दे दिया। तब से यह कुण्ड मिरगी कुण्ड के नाम से जाना जाने लगा। इस कुण्ड को लेकर कई रहस्य रोमांचक अलौकिक घटनाएं जुड़ी हुई हैं।

शिवरात्रि के दिन जुलूस की समाप्ति पर सभी तपस्वी, साधु, संत, महात्मा इस कुण्ड में डुबकी लगाते हैं। सबकी आंखों से स्नानकर्त्ता साधु-समुदाय गुजरता है परन्तु बड़ा आश्चर्य तब होता है जब स्नान के बाद बहुत ही कम साधु लौटते हुए दिखाई पड़ते हैं। शेष साधु कब कहां कैसे अलोप हो जाते हैं, इसे कोई नहीं जान पाया।

गिरनार की यात्रा हमारे सांसारिक मन की दिव्य विभूति है। आत्मचैतन्य को उजास देकर नर से नारायण बनने की पावन प्रक्रिया है। जन को वन के वैभव के साथ जोड़ने की स्तुति-कामना है और तप-खप कर भूत से भभूत बनने की मंत्र-सिद्धि है।

- म. भा.

बाजार / समाचार

मोबिल1 की 50वीं वर्षगांठ पर आगे के लिए तैयार

उदयपुर (ह. सं.)। एक्सॉनमोबिल को वैश्विक बाजार में मोबिल1 मोटर ऑयल की शुरूआत करने के 50वीं वर्षगाँठ मनाने पर गर्व है। 2024 में एक्सॉनमोबिल साझेदारी, मोटरस्पोर्ट्स और आभासी वास्तविकता में पहल की एक श्रृंखला के साथ मोबिल1 ब्रांड के अपने 50 साल के इतिहास का जश्न मनाएगा, जिनमें से प्रत्येक ब्रांड की विरासत और आने वाले समय की चीजों को उजागर करेगा।

मोबिल 1 ग्लोबल ब्रांड मैनेजर लॉरा बस्टर्ड ने कहा कि आज, मोबिल1 नवाचार, सहयोग और ग्राहकों के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के साथ दुनिया का अग्रणी सिंथेटिक मोटर ऑयल ब्रांड है। इस प्रतिष्ठित ब्रांड के साथ, एक्सॉनमोबिल इंजन सुरक्षा और प्रदर्शन के भविष्य को आकार देना जारी रखने के लिए उत्साहित है। एक्सॉनमोबिल एक क्रांतिकारी सिंथेटिक मोटर ऑयल के रूप में मोबिल1 ब्रांड की विरासत पर बहुत गर्व महसूस करता है। 50 साल पहले अपनी स्थापना से ही मोबिल1 मोटर ऑयल ने लगातार गुणवत्ता और प्रदर्शन के मानक स्थापित किए हैं और अगले 50 वर्षों तक इसमें सुधार और उत्कृष्टता जारी रहेगी। ऑटोमोटिव क्षेत्र या रेसिंग का ज्ञान रखने वाला कोई भी व्यक्ति जानता है कि यह ब्रांड कितना प्रतिष्ठित रहा है और रहेगा।

सुशील रेड्डी ने ली एमजी जेडएस ईवी के साथ ईको राइड

उदयपुर (ह. सं.)। सस्टेनेबिलिटी एडवोकेट सुशील रेड्डी ने छात्रों को 'सनपेडल राइड' के माध्यम से शिक्षित किया, जो मुंबई की सड़कों से काजीरंगा वन्यजीव अभयारण्य तक एक क्रॉस-इंडिया ड्राइव थी। 25 से अधिक शहरों और 9,000 किलोमीटर से अधिक का ये अभियान सस्टेनेबल मोबिलिटी/ टिकाऊ गतिशीलता को बढ़ावा देने और इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) के आसपास प्रचलित मिथकों को चुनौती देने के लिए रेड्डी के मिशन में एक महत्वपूर्ण माइलस्टोन साबित हुआ है। भारत की पहली प्योर इलेक्ट्रिक इंटरनेट एसयूवी- एमजी जेडएस ईवी इस यात्रा का केंद्र है, जो इनोवेशन और पर्यावरण जागरूकता के फ्यूजन का प्रतीक है।

इस यात्रा के दौरान रेड्डी ने भारत के विभिन्न इलाकों और संस्कृतियों में ईवीस की स्थायी क्षमता को उजागर किया। काजीरंगा रूट पर सुशील प्रमुख कॉलेजों और संस्थानों में पहुंचे, जहां उन्होंने ईवीस के फायदों पर छात्रों को शिक्षित किया। इसमें प्रमुख रूप से किफायती संचालन और ओनरशिप कॉस्ट, कम कार्बन उत्सर्जन, आरामदायक ड्राइविंग अनुभव, विकसित चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर, बैटरी टाइप्स और सेफ्टी समेत कई अन्य आकर्षक लाभ शामिल हैं। कॉलेज सत्र का समापन एक क्विज़ और एमजी जेडएस ईवी के डेमो के साथ हुआ। कार्यक्रम के माध्यम से, सुशील रेड्डी 60 दिनों में 20 विश्वविद्यालयों में 5,000 से अधिक छात्रों के साथ जुड़े।

मोटोरोला एज 50 प्रो स्मार्टफोन लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के सर्वश्रेष्ठ 5जी स्मार्टफोन ब्रांड मोटोरोला ने अपने नए प्रीमियम स्मार्टफोन - मोटोरोला एज 50 प्रो के भारत में ग्लोबल फर्स्ट लॉन्च की मेजबानी की। यह फोन मोटोरोला के एज फ्रेंचाइजी का सबसे नया एडिशन है। यह स्मार्टफोन बुद्धिमत्ता और कला के मिश्रण का बेहतर उदाहरण है और प्रीमियम स्मार्टफोन सेगमेंट में हलचल मचाने के लिए तैयार है। इस स्मार्टफोन में दुनिया का पहला और एकमात्र एआई पावर्ड प्रो-ग्रेड कैमरा दिया गया है, जो पैनटोन1 द्वारा मान्य वास्तविक रंगों और मानव त्वचा टोन की विशाल रेंज के साथ आता है। इस पैनटोन द्वारा मान्य स्मार्टफोन में दुनिया का पहला और एकमात्र टू कलर डिस्प्ले भी दिया गया है।

मोटोरोला इंडिया के प्रबंध निदेशक टी.एम. नरसिम्हन ने कहा कि मोटोरोला एज 50 प्रो एक खूबसूरती से तैयार किए गए संतुलित डिजाइन में पेश किया गया है। यह फोन मूनलाइट पर्ल फिनिश में दुनिया के पहले हस्तनिर्मित डिजाइन में आता है। इटली में बनाया गया ये डिजाइन फोन के पिछले हिस्से में देखने को मिलता है। इसके अलावा इस फोन में एक शक्तिशाली स्नैपड्रैगन 7 जेन 3 प्रोसेसर भी है जो जेनरेटिव एआई फीचर्स और दूसरे एक दम नए फीचर्स प्रदान करता है। इसमें तेज 125 डब्ल्यू टर्बोपावर चार्जिंग, 50डब्ल्यू वायरलेस चार्जिंग, आईपी682 अंडरवाटर प्रोटेक्शन और 256 जीबी स्टोरेज के साथ 12जीबी रैम जैसे फीचर शामिल हैं। उपभोक्ता यह डिवाइस खरीदने के लिए दो ऑफर का फायदा उठा सकते हैं, जिससे प्रोडक्ट की प्रभावी कीमत 27,999 रुपये (8जीबी+256जीबी के लिए) और 31,999 रुपये (12जीबी +256जीबी के लिए) से शुरू होगी।

भारत 120.90 लाख टन सरसों उत्पादन की ओर

उदयपुर (ह. सं.)। भारत 2023-24 में 120.90 लाख टन की रिकॉर्ड रेपसीड-सरसों फसल के उत्पादन की ओर बढ़ रहा है। पिछले वर्ष लाभकारी कीमतों ने तिलहन की रिकॉर्ड बुआई को प्रोत्साहित किया है। सरसों उत्पादक राज्यों के अधिकांश हिस्सों में अनुकूल मौसम से भी अब तक के उच्चतम उत्पादन में मदद मिली है। द सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा किए गए फसल सर्वेक्षण में यह परिणाम सामने आए हैं।

पिछले कुछ वर्षों में, भारत दुनिया के सबसे बड़े खाद्य तेल आयातक के रूप में उभरा है, जिससे भारत पर अतिरिक्त वित्तीय भार पड़ रहा है, साथ ही देश का किसान भी इससे प्रभावित हो रहा है। द सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) ने एक जिम्मेदार और शीर्ष उद्योग निकाय के रूप में अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए तिलहन की घरेलू उपलब्धता बढ़ाने के लिए कई पहल किए हैं। इनमें से एक पहल है 'सरसों मॉडल फार्म प्रोजेक्ट' जिसे 2029-30 तक भारत के रेपसीड-सरसों उत्पादन को 200 लाख टन तक बढ़ाने के उद्देश्य से 2020-21 से लागू किया गया है।

अनुकूल मौसम और सरसों की कीमत के साथ इन ठोस प्रयासों के परिणामस्वरूप, भारत में साल दर साल सरसों के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। 2020-21 में लगभग 86 लाख टन, 2021-22 में 110 लाख टन और 2022-23 में 113.5 लाख टन सरसों का उत्पादन दर्ज किया गया। रिकॉर्ड 100 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बुआई होने से खाद्य तेलों की घरेलू आपूर्ति को बढ़ावा मिला है जिससे 2023-24 सीज़न में सरसों का उत्पादन 120.9 लाख टन के सर्वकालिक उच्च स्तर को छूने की संभावना है।

पीआईएमएस में नई सीटी स्केन मशीन का उद्घाटन

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), उमरड़ा के रेडियोलॉजी विभाग में नई अत्याधुनिक सीटी स्कैन मशीन का उद्घाटन चेयरपर्सन श्रीमती शीतल अग्रवाल ने किया। यह नई सीटी स्कैन मशीन अस्पताल की चिकित्सा सेवाओं को और मजबूत करेगी और रोगियों का बेहतर और सटीक निदान प्रदान करेगी। मशीन नवीनतम तकनीकों से लैस है और यह उच्च गुणवत्ता प्रदान करेगी, जिससे डॉक्टरों को रोगों का शीघ्र और सटीक निदान करने में मदद मिलेगी।

पिम्स के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने कहा कि आधुनिक मशीनरी और उच्च कुशल डॉक्टरों के माध्यम से ही बेहतर चिकित्सा संभव है। पिम्स हॉस्पिटल सदैव रोगियों को सर्वोत्तम चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। रेडियोलॉजी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. हरिराम ने बताया कि उच्च रिजॉल्यूशन इमेजिंग, कम विकिरण खुराक, तेज स्कैनिंग व 3डी इमेजिंग से मरीज लाभान्वित होंगे। पिम्स हॉस्पिटल के संस्थापक बी. आर. अग्रवाल ने कहा कि पिम्स हॉस्पिटल अपनी उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवाओं और अत्याधुनिक मशीनरी के लिए जाना जाता है। यह नई सीटी स्कैन मशीन इस प्रतिष्ठा को और मजबूत करेगी। इस अवसर पर साई तिरुपति विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी. एल. कुमार, प्रिंसिपल डॉ. सुरेश गोयल, रजिस्ट्रार देवेंद्र जैन, मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डॉ. चंद्रा माथुर सहित विभागाध्यक्ष व गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

स्लाइस का कियारा के साथ नया कैम्पेन

उदयपुर (ह. सं.)। स्लाइस ने अपने आकर्षक ग्रीष्मकालीन अभियान रस ऐसा कि बस ना चलेगा का अनावरण करने के लिए अपनी ब्राण्ड एम्बेसेडर कियारा आडवाणी के साथ मिलकर काम किया है। इस अभियान का मकसद आम की अनबुझी इच्छा को पूरा करने के लिए अंतिम साथी के रूप में स्लाइस की स्थिति को सुदृढ़ करना है। एक मनोरम ब्राण्ड फिल्म के माध्यम से, यह आम के अनूठे आकर्षण को उजागर करता है जो स्लाइस अपने उपभोक्ताओं को प्रदान करता है, जो रसीले आम को काटने के असीम आनन्द को दर्शाता है। यह कैम्पेन स्लाइस के अनूठे जादू की परतें खोलता है, उपभोक्ताओं को आम के रसीले स्वाद की सुस्वादु दुनिया में ले जाता है, जहां इसकी हर घूंट सीमाओं और अवरोधों के बिना महसूस की जा सकती है। स्लाइस एण्ड ट्रॉपिकाना, पेप्सीको इण्डिया के एसोसिएट डायरेक्टर अनुज गोयल ने कहा कि एक ब्राण्ड के रूप में स्लाइस को भारतीय बाजार में हमेशा ही बहुत महत्व दिया जाता है, जो प्रामाणिक आम अनुभव के निकटतम स्वाद प्रदान करने का प्रयास करता है। हमारा नवीनतम समर कैम्पेन आम की इस रसभरी यात्रा का आनन्द लेने के लिए स्लाइस के दृष्टिकोण को दर्शाता है।

एचडीएफसी बैंक की कवरत्ती द्वीप में शाखा का शुभारंभ

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने केंद्र शासित प्रदेश लक्षद्वीप के कवरत्ती द्वीप में एक शाखा खोली है। इससे केंद्र शासित प्रदेश में शाखा रखने वाला यह एकमात्र निजी क्षेत्र का बैंक बन गया है। इसका उद्घाटन भारतीय नौसेना के कमांडिंग ऑफिसर कैप्टन लवकेश ठाकुर और डॉ. के. पी. मुथुकोया ने किया। इस अवसर पर एस. संपतकुमार, समूह प्रमुख-रिटेल शाखा बैंकिंग, एचडीएफसी बैंक और संजीव कुमार, शाखा बैंकिंग प्रमुख, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी और अन्य स्थानीय गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। शाखा का उद्देश्य व्यक्तिगत बैंकिंग, डिजिटल बैंकिंग पर ध्यान केंद्रित करने वाली सेवाओं की विस्तृत श्रृंखला की पेशकश करके केंद्र शासित प्रदेश में बैंकिंग बुनियादी ढांचे को उन्नत करना है, जिसमें खुदरा विक्रेताओं के लिए क्यूआर आधारित लेनदेन सहित अनुकूलित डिजिटल समाधान भी शामिल हैं।

साई तिरूपति विश्वविद्यालय में युवामंथन कार्यक्रम

उदयपुर (ह. सं.)। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली ने 2023 में सभी संस्थानों में युवामंथन देश के युवाओं को जागरूक करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी अभियान ''2047 तक भारत की यात्रा को प्रज्वलित करना: एक विकसित भारत का दृष्टिकोण'' उच्च शिक्षा विभाग के पूर्वावलोकन के तहत देश के अनुभवात्मक शिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके एक विशिष्ट कार्यक्रम शुरू किया।

साई तिरूपति विश्वविद्यालय (एसटीयू), उदयपुर ने उपरोक्त यूजीसी संचार द्वारा प्रदान किए गए लिंक के माध्यम से इस कार्यक्रम के तहत भागीदारी के लिए पंजीकरण कराया। एसटीयू को युवामंथन मॉडल यूनाइटेड नेशंस (वायएमयूएन) केएक विशिष्ट विषय ''पर्यावरण पहल के लिए जीवन शैली : लाइफ'' निबंध, पोस्टर और वाद-विवाद प्रतियोगिताएं तीन विशिष्ट गतिविधियों के संचालन का काम सौंपा गया।

एसटीयू के प्रबंधन, शिक्षकों, कर्मचारी, स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों ने इस कार्यक्रम में जोश और उत्साह के साथ भाग लिया। इंटर्न सहित एमबीबीएस छात्रों के सभी बैचों के लिए 'पर्यावरण पहल के लिए जीवन शैली : जीवन' विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता में 30 छात्रों ने भाग लिया था। इसके बाद निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 50 छात्रों ने भाग लिया। वाद-विवाद प्रतियोगिता में 15 छात्रों ने भाग लिया था। इन सभी आयोजनों का निर्णायक मंडल के रूप में वरिष्ठ संकाय सदस्यों द्वारा निर्णय लिया गया। सभी कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में छात्र, शिक्षक और कर्मचारी उपस्थित हुए और प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया।

अध्यक्ष आशीष अग्रवाल और श्रीमती शीतल अग्रवाल ने विश्वविद्यालय स्तर पर कार्यक्रमों के सुचारू संचालन के लिए आवश्यक सभी सुविधाएं और संसाधन उपलब्ध कराए। एसटीयू के कुलपति डॉ. बी. एल. कुमार, रजिस्ट्रार डॉ. देवेन्द्र जैन, प्राचार्य एवं नियंत्रक डॉ. सुरेशचंद्र गोयल, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. चंद्रा माथुर और विश्वविद्यालय के पूरे प्रबंधन ने कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए बिना शर्त समर्थन और सहयोग प्रदान किया।

विभिन्न गतिविधियों का मूल्यांकन डॉ. प्रवीण खैरकर, डॉ. हरिराम, डॉ. नितेश मंगल और डॉ. चिंतन दोषी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के समन्वयक सामुदायिक चिकित्सा विभाग के प्रोफेसर एवं प्रमुख डॉ. दिलीपकुमार पारीक थे। इस आयोजन में सामुदायिक चिकित्सा विभाग के संकाय सदस्यों, मेडिकल सोशियल वर्कर और कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से योगदान दिया।

उत्तरकाशी में बकरियों का त्योहार

-दिनेश रावत-

वर्ष का एक दिन, जब लोकवासी आटे की बकरियां बनाते हैं। उन्हें चारा-पत्ती चुंगाते हैं। पूजा करते हैं। धूप-दीप दिखाते हैं। गंध—अक्षत, पत्र—पुष्प चढ़ाते हैं। रोली बांधते हैं, टीका लगाते हैं और अंत में पूजा-बलि देकर त्योहार मनाते हैं। इन बकरियों को धातु के धारदार हथियार से नहीं बल्कि किंगोड़ की लकड़ी से तलवार नुमा हथियार से काटा जाता है।

बकरियों से जुड़ा यह त्योहार जेठ (जेष्ठ) माह की संक्रांति तिथि को मनाया जाता है इसलिए इस संग्रांद यानी संक्रांति को बाकर्या संग्रांद तथा त्योहार को 'बाकर्या त्यार' कहते हैं। बाकर्या त्यार (त्योहार) मनाने की यह परम्परा उत्तराखण्ड के सीमान्त उत्तरकाशी के पश्चितोत्तर रवांई क्षेत्र में वर्षों से प्रचलित रही है। इस त्योहार के दिन लोग पिठाड़ी (चावल का आटा) तथा उसकी अनुपलब्धता में पिद्यू यानी गेहूं का आटा गूंथ कर उससे अपने-अपने घरों में बकरियां बनाते हैं। बकरी बनाने की इस श्रृंखला में बाकरी (बकरी), बाकरु (बकरा) के साथ चेल्क्या (मेमने) बनाए जाते हैं।

आटे से बनी बकरियों को कुछ लोग सीड़ों के समान 'अथार' लगाकर भाप पर पकाते हैं तो कुछ तेल में तल लेते हैं, जबकि कुछ मात्र गर्म तवे पर सेक कर ही सन्तुष्ट हो लेते हैं। अर्थात तलना, भूनना लोगों के स्वाद और संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर करता है।

बकरियों से जुड़ा यह त्योहार बड़े-बुजुर्गों के लिए आस्था का तो बच्चों के लिए मनरंजन व रौचकता का पर्व होता है। इसलिए बड़े-बुजुर्ग श्रद्धा-भक्ति के साथ पूजा-आराधना में जुटे रहते हैं तो बच्चे इन्हें चारा-पत्ती चुंगाने, इधर-उधर घुमाने, हाथों में उठा कर नचाने व निहारने में मस्त रहते हैं।

आटे से बनी इन्हीं बकरियों के माध्यम से पूजा की जाती है। पूजा-अर्चना में एक-दो को मुखिया अपने हाथों से काटकर वन देवियों को भोग लगाते हैं तो शेष को बच्चे दिनभर खाते-खेलते हुए निपटाते रहते हैं। इनके अंशों को प्रसाद स्वरूप सभी में बांटा जाता है।

पहाड़ का जीवन मूल रूप से उत्सवधर्मी रहा है। पहाड़ के हर त्योहार के साथ बहुत से किस्से-कहानियां, आस्था-विश्वास, भय-भक्ति, ऋतुचक्र, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता आदि जुड़े रहते हैं। ऐसा ही इस त्योहार के मूल में भी है। लोकजीवन में लोक देवी-देवताओं का सदैव से ही विशिष्ट स्थान एवं महत्त्व रहा है। इस लोकांचल में पूजित-प्रतिष्ठित देवी-देवताओं में बण्क्या अर्थात् वन-देवियों की खासी मान्यता है और उनकी पूजा-परम्परा भी प्रचलित है।

वन-देवियों वनों की अधिष्ठात्री देवियां मानी जाती हैं। उन्हें 'इन्द्र की परियां' कहकर भी सम्बोधित किया जाता है। लोक मान्यता है कि अतिवृष्टि, ओलावृष्टि व अनावृष्टि सब इनके ही अधिकारी क्षेत्र में हैं। वन-देवियां जब चाहें बारिश इत्यादि करवा सकती हैं और जब चाहें रूकवा सकती हैं। वे हर प्रकार के अनिष्ट को टाल सकती हैं। इन्हीं की कृपा से पशु-मवेशियों को लेकर महीनों तक निर्जन वनों में रहने वाले चरवाहों की मवेशियों तथा स्वयं उन पर आने वाले बड़े-से-बड़े संकट टल जाते हैं। अतिवृष्टि, ओलावृष्टि व अनावृष्टि आदि से सेरों (खेतों) में लहलहा?ती फसलें बचती ही नहीं हैं बल्कि पैदावार भी अधिक अच्छी होती है।

इसी मान्यता के चलते लोकवासी समय-समय पर इनके निमित्त पूजा का आयोजन करते हैं जिसमें जेठ की बाकर्या संग्रांद भी प्रमुखता से शामिल है।

खेती-किसानी व पशु-मवेशियों से जुड़े लोगों के लिए ज्येष्ठ का महीना बहुत खास होता है। खून-पसीने से अभिसिंचित फसलें तैयार हो जाती हैं। लोग उन्हें खेत-खलिहानों से समेटकर कोठारों (अन्नागारों) में सुरक्षित-संर?क्षित करने की तैयारी में रहते हैं। 'रोपणी-बिजाड़ियों' (रोपाई) का कार्य भी गति पकड़ने लगता है। ऐसे समय में एक भय बना रहता है कि कहीं उनकी फसलें अतिवृष्टि या ओलावृष्टि की भेंट न चढ़ जाएं। दूसरी तरफ लोग अपने पशु-मवेशियों को लेकर 'डांडा-कांठ' यानी उच्च हिमालयी क्षेत्रों में जाने की तैयारी करने लगते हैं। उन्हें अब भाद्रपद मास तक बिना किसी सुख-सुविधा के पशु-मवेशियों के साथ तमाम विषमताओं के मध्य मौसमी झंझावात, क्रूर व खूंखार जंगली जानवरों के बीच जंगल में ही रहना है। जंगल में रहते हुए उन्हें कई बार अपनी तो कई बार मवेशियों की रक्षा के लिए जूझना भी पड़ता है।

ऐसी स्थिति में किसी के साथ न होने पर भी उन्हें हमेशा किसी के साथ होने का अहसास बना रहता है। वह अहसास होता है उन देव-शक्तियों का जिसका नाम जपे बिना वे खूंटे से बंधे जानवरों को खोलना भी मुनासिफ नहीं मानते हैं। इसलिए जंगल जाते हुए सबसे पहले लोकपूजित देवी-देवताओं के नाम से 'टीखू' (एक सिक्का) रखते हैं। कुशलता के लिए प्रार्थना करते हैं। ऐसे ही तमाम संभाव्य संकटों को टालने के लिए वे अपने आराध्य देवी-देवताओं का पूजन-वन्दन, आह्वान-स्मरण करते रहते हैं।

इसी विश्वास के साथ सम्बन्धित लोकांचल में बाकर्या संग्रांद के अतिरिक्त 'सकल' देने की परम्परा भी प्रचलित है। सकल अर्थात फसल चक्रानुसार एक मौसम विशेष में फसल-पानी या खेती-किसानी सम्बन्धी कार्यों से कुशलतापूर्वक निवृत्ति होने पर दी जाने वाली एक ऐसी विशेष पूजा जिसके मूल में कृतज्ञता का भाव समाहित होता है। सकल पूजा का आयोजन ग्राम्यजन कई बार सामूहिक रूप से गांव में ही करते हैं तो कई ग्राम्य अंचलों के लोग परम्परानुसार दूर डांडों में जाकर पूजा करते हैं। सकल भी प्राय: वन-देवियों को ही समर्पित होती है।

इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में थाती पूजन के दौरान भी बण्क्या पूजन का खास विधान है। थाती पूजन के दौरान वन-देवियों की पूजा के लिए भी आटे की बकरियां ही बनायी जाती हैं। उन्हें थरण (पूजा स्थल) पर रखाकर वहीं से भोग-पूजा की जाती है।

यह भी उल्लेखनीय है कि रवांई क्षेत्र की यमुना एवं कमल नदी घाटी क्षेत्र के ग्राम्य अंचलों में यह त्योहार ज्येष्ठ संक्रांति को तो टौंस नदी घाटी क्षेत्र में शिवरात्रि के दिन मनाया जाता है। संभवत: इसलिए कि इस क्षेत्र के भेडाल (भेड़-बकरी चुंगाने वाले) शिवरात्रि समाप्त होते ही 'डांडा—कांठा' के लिए निकल पड़ते हैं।

डॉ. बी. एल. कुमार सांई तिरूपति विश्वविद्यालय के वाईस चान्सलर बने

उदयपुर (ह. सं.)। सांई तिरूपति विश्वविद्यालय, उमरड़ा उदयपुर मे डॉ. बी. एल. कुमार ने प्रेसिडेन्ट (वाईस चान्सलर) का पद ग्रहण किया। डॉ. कुमार विगत कई वर्षों से इसी विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज मे ऑर्थोपेडिक

विभाग में प्रोफेसर के पद पर आसीन हैं। इस दौरान विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल, श्रीमती शीतल अग्रवाल, डॉ. सुरेश गोयल, रजिस्ट्रार डॉ. देवेन्द्र जैन एवं अन्य अधिकारीगण ने डॉ. कुमार को बधाई दी।

इस अवसर पर डॉ. कुमार ने कहा कि जो प्रोजेक्ट चल रहे हैं, मेडिकल संबंधी अन्य विशेष प्रोजेक्ट लाकर उन पर कार्य कर विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाया जाएगा। शुरूआत से अभी तक इस इंस्टीट्यूट की प्रोग्रेस को देखा है। पिम्स दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ रहा है। वर्तमान में पिम्स में 750 एमबीबीएस तथा 200 पीजी के छात्र-छात्राएं अध्ययन कर रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि डॉ. कुमार मार्च 2015 से विश्वविद्यालय से जुड़े हुए हैं। वे साल भर प्रिंसिपल एंड कंट्रोलर भी रहे। पूर्व में डॉ. कुमार ने 20 वर्ष तक आरएनटी मेडिकल कॉलेज उदयपुर के आर्थोपेडिक विभाग में सेवाएं दीं तत्पश्चात 2014 में सीनियर प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष रहते सेवानिवृत्त हुए।

आरएसएमएम पेंशनर्स वेलफेयर सोसाइटी का होली मिलन समारोह

उदयपुर (ह. सं.)। आरएसएमएम पेंशनर्स वेलफेयर सोसाइटी द्वारा श्रीकृष्ण वाटिका में सपत्नी होली मिलन व सांस्कृतिक समारोह का आयोजन किया गया। इसमें सभी वरिष्ठ सदस्यों ने गीत, चुटकुले, नृत्य प्रस्तुत कर लाजवाब प्रस्तुतियां दी। आर. सी. कुमावत ने संचालन करते हुए वरिष्ठ सदस्यों को गाने व थिरकने के लिए मजबूर कर दिया। इस दौरान उपस्थित सभी महिलाओं व पुरुष एक साथ गुलाल, अबीर व गुलाब की पंखुड़ियां उड़ाते हुए नाचने लग गए। आर. पी. शर्मा, सुनील रोजर्स, रमेश शर्मा, रामप्रताप जेठी, मनोहरसिंह, श्रीमती विनोद सोनी एवं श्रीमती विजेंद्र मेहता ने प्रस्तुतियां दी।

समिति उपाध्यक्ष के सी शर्मा ने बताया कि समिति द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ-साथ डॉ. कृष्णकुमार बाड़ोलिया को भी आमंत्रित किया जिन्होंने बढ़ती उम्र में लाइफस्टाइल को कैसे जिया जाय और खानपान पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सभी को गुस्सा छोड़ो प्रसन्न रहो का मूल मंत्र दिया। सोसाइटी के महासचिव हेमंत त्रिवेदी, दिनेश माली व देवनारायण धायभाई ने आगंतुकों का स्वागत किया। अध्यक्ष एल सी जोशी ने आभार व्यक्त किया।

सखी कार्यक्रम में 90 हजार से अधिक जागरूक

उदयपुर (ह. सं.)। हिंदुस्तान जिंक के सखी प्रोजेक्ट के तहत् डेढ़ माह तक संचालित अभियान उठोरी में समूह चर्चाओं, रैलियों और स्कूल सत्रों ने घरेलू हिंसा, कन्या भ्रूणहत्या, बालविवाह जैसे गंभीर सामाजिक मुद्दों पर 90 हजार से अधिक लोगो को जागरूक किया गया। अभियान आगुचा, चंदेरिया, दरीबा, देबारी, कायड, पंतनगर, जावर सहित सभी परिचालन क्षेत्रों में चलाया गया।

इस पहल का एक महत्वपूर्ण पहलू एक समर्पित कैडर की स्थापना है जिसे जेंडर सखी के नाम से जाना जाता है, जिसमें इन महत्वपूर्ण मामलों पर अपने साथियों और व्यापक समुदाय को शिक्षित करने के लिए महिलाएं शामिल हैं। अभियान के तहत् परिचालन क्षेत्रों के आसपास के विद्यालयों में जेंडर सखियों द्वारा सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श पर प्रशिक्षण और उसके बाद आयोजित सत्र शामिल थे। इसके अतिरिक्त, खेलों में समावेशन पर एक ज्ञानवर्धक सत्र में मैदान के अंदर और बाहर समावेशिता और समान अवसरों को बढ़ावा देने में खेल की परिवर्तनकारी शक्ति पर प्रकाश डाला गया। उठोरी क्षेत्र में नवाचार करने के लिए, कथा मंच, दिल्ली द्वारा समर्थित पांच दिवसीय आवासीय थिएटर कार्यशाला ने तीस सखी महिलाओं को सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने के लिए नाटकीय माध्यमों से सशक्त बनाया।

डॉ. छतलानी का चौथा विश्व रिकॉर्ड

उदयपुर (ह. सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ के डॉ. चंद्रेशकुमार छतलानी द्वारा विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय संगठनों यथा माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, सिस्को, विश्व स्वास्थ्य संगठन आदि के विविध अकादमिक कार्यक्रमों के ऑनलाइन माध्यम से कोविड लॉकडाउन के समय एक हजार से अधिक प्रमाणपत्र अर्जित करने के रिकॉर्ड को श्रीलंका के अंतर्राष्ट्रीय संगठन वर्ल्ड बुक रिकॉर्ड ने भी स्वीकृत किया है। इससे पूर्व डॉ. छतलानी के इस रिकॉर्ड को वर्ल्डस ग्रेटेस्ट रिकॉर्ड्स व द ट्रिब्यून वर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा भी मान्यता प्रदान की गई है। डॉ. चंद्रेश पांचवें विश्व रिकॉर्ड के लिए भी कार्यरत हैं।

ब्रेन ट्यूमर की सफल सर्जरी

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने मस्तिष्क के ट्यूमर की सफल सर्जरी की है। इस सफल उपचार को न्यूरोसर्जरी विभाग के एचओडी डॉ. गोविन्द मंगल, डॉ. गौरव गुप्ता, न्यूरो एनेस्थीसिया से डॉ. निलेश भटनागर, डॉ. आशीष पटियाल, डॉ. राम विलास, ओटी स्टाफ, आईसीयू टीम द्वारा किया गया।

डॉ. मंगल ने बताया कि गत दिनों जब रोगी को गीतांजली हॉस्पिटल लाया गया तब उन्हें होश नहीं था, सिर दर्द था। इस पर रोगी के मस्तिष्क की एमआरआई की गयी जिसमें ब्रेन ट्यूमर की पुष्टि हुई। ट्यूमर काफी जटिल व अन्दर था। ऐसे में न्यूरो नेविगेशन व माइक्रोस्कोप की सहायता से रोगी की हाई-एंड सर्जरी की गयी। डॉ. मंगल ने बताया कि न्यूरो नेविगेशन मशीन से ट्यूमर का सटीक स्थान व कहाँ तक फैला है का आसानी से पता चल जाता है। सर्जरी के बाद रोगी अब स्वस्थ है। उसका इलाज आयुष्मान आरोग्य योजना के तहत नि:शुल्क किया गया।

बुजुर्ग बोझ नहीं हमारी संपत्ति हैं : रामनाथ कोविन्द

तारा संस्थान के 12 वर्ष पूर्ण होने पर भव्य समारोह में शामिल हुए पूर्व राष्ट्रपति

उदयपुर (ह. सं.)। बुजुर्ग बोझ नहीं, वे एसेट हैं। वे अनुभव का खजाना हैं। वे हमारी सम्पत्ति है। यही नहीं बुजुर्गों का होना एक आश्वासन है। एक परिवार में बुजुर्ग की बहुत उपयोगिता होती है। हर काल और समय में उनकी उपयोगिता सार्थक होती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि बुजुर्गों में अनुभव का धन और आत्मविश्वास का बल होता है। उक्त उद्गार तारा संस्थान उदयपुर के 12 वर्ष पूर्ण होने पर मां द्रोपदी देवी आनंद वृद्धाश्रम में 08 अप्रेल को आयोजित समारोह में पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने व्यक्त किये। इससे पूर्व तारा संस्थान की संस्थापक अध्यक्ष कल्पना गोयल एवं संस्थापक सचिव दीपेश मित्तल ने पूर्व राष्ट्रपति का स्वागत किया।

पूर्व राष्ट्रपति कोविन्द ने कहा कि हर परिवार की अपनी अलग कहानियां होती है। कोई कहानी छोटी होती है, कोई बड़ी होती है। उन्हें सुनने और सुनाने में ही हमारा जीवन गुजर जाता है। इसलिए हमें यह सोचना चाहिये कि हमने आज तक केवल लिया ही लिया है। हनमे समाज को दिया क्या है। जिस दिन आप में देने का भाव आ जाएगा, यकीन मानिये जितना आनन्द लेने में आ रहा था, उससे दुगुना आनन्द देने में आएगा।

उन्होंने मेवाड़ की पवित्र पावन धरती की महानता को दर्शाते हुए कहा कि इस धरती पर महाराणा प्रताप, भामाशाह और मीरांबाई जैसी महान विभूतियां हुई हैं। उन्हें देश ही नहीं दुनिया में महानता प्रदान की जाती है। उदयपुर के लोग अपनी सभ्यता और संस्कृति के लिए कभी भी पीछे नहीं हटते हैं। इस धरा की कहानियां प्रेरणादायी हैं। महाराणा प्रताप, भामाशाह और मीरांबाई का स्थान भारत के इतिहास में सर्वोच्च है। उन्होंने मानव जीवन की श्रेष्ठतम परम्पराओं को अपने-अपने हिसाब से जीया और निभाया है। महाराणा प्रताप ने प्रजा के साथ ही अपने राष्ट्र और धर्म संस्कृति की रक्षा के लिए घास की रोटी तक खाई लेकिन इस पर आंच नहीं आने दी।

उन्होंने कहा कि आज तो हम ऐसा सोच भी नहीं सकते जैसा महाराणा प्रताप ने करके दिखाया था। भामाशाह ने अपने धन का सदुपयोग करते हुए सारा धन राष्ट्र और धर्म संस्कृति की रक्षा के लिए दान कर दिया। वे

चाहते थे कि कोई भी व्यक्ति भूखा ना रहे और कोई भी गरीबी की वजह से धर्म नहीं छोड़े। मीरांबाई की भक्ति परम्परा ही इतनी उच्च कोटि की थी कि उन्होंने श्रीकृष्ण पर ही विश्वास किया चाहे उन्हें जहर ही क्यों न पीना पड़ा। मेवाड़ की इसी परोपकार, राष्ट्रधर्म संस्कृति की रक्षा की भावना ने उन्हें हमेशा प्रभावित किया है। दीन-दुखियों की सेवा करना ही ईश्वर की सेवा करने के समान है।

पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि तारा संस्थान के संचालक भी उन्हीं के वंशज लगते हैं जो आज इतने बड़े स्तर पर बुजुर्गों और पीड़ितों की सेवा में लगे हुए हैं। उन्होंने कहा कि आज के दौर में परिवार में बढ़ते विघटन एवं भौतिक सुख सुविधाओं की प्राप्ति की महत्वाकांक्षाओं के चलते घर के युवा अक्सर घर के बुजुर्ग माता-पिता को अकेला छोड़ कर रोजगार और आर्थिक लाभ के लिए चले जाते हैं। भौतिक महत्वाकांक्षाएं उन्हें ऐसा करने पर मजबूर करती हैं। इसमें उनकी भी कोई गलती नहीं है। उन्हें जीवनयापन के लिए ऐसा करना ही पड़ता है। इसी तरह से बुजुर्गों के घर में अकेले रहने का दूसरा कारण यह भी सामने आता है कि पहले हमारे यहां संयुक्त परिवार की परम्परा हुआ करते थी लेकिन धीरे-धीरे बदलते दौर में यह परम्परा लगभग खत्म होती गई। इस पर हमें मन्थन करने की जरूरत है। इसकी शुरूआत भी स्वयं से है करनी होगी। सामाजिक और पारीवारिक जिम्मेदारियों को भी समझना होगा।

तारा संस्थान की संस्थापक अध्यक्ष कल्पना गोयल ने स्वागत उद्बोधन देते हुए कहा कि ऐसा पुनीत कार्य करने की प्रेरणा उन्हें अपने पिता से मिली। पहले वह बुजुर्गों की ऐसी स्थितियां देख कर बहुत भावुक हो जाया करती थी लेकिन धीरे-धीरे इनके साथ रह कर इनकी सेवा करने का अवसर मिला तो अब उनमें हिम्मत और हौंसला पैदा हो गया है और इन सभी की सेवा करने में उन्हें आनन्द आता है। पहले इसकी शुरूआत छोटे रूप में की थी और आज यह बड़े रूप में जैसा भी है सभी के सामने है। समारोह में नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक कैलाश मानव ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन संस्थापक सचिव दीपेश मित्तल ने किया।

समारोह में तारा संस्थान की और से संचालित 'मस्ती की पाठशाला' के बच्चों ने भावपूर्ण प्रस्तुति देते हुए राम आएंगे भजन पर नाट्य का मंचन किया। इसमें प्रभु श्रीराम, माता सीता एवं लक्ष्मण के वनागमन के दौरान माता शबरी द्वारा बड़े ही आदर के साथ उन्हें अपने आश्रम में ले जाने और झूठे बैर खिलाने के दृश्यों को देखकर पूर्व राष्ट्रपति कोविन्द सहित हर कोई भावुक हो गया। इसके बाद बुजुर्ग फैशन शो हुआ जिसमें बुजुर्गों ने लता मंगेशकर, आर्य भट्ट, वीर सावरकर, कल्पना चावला, अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, रानी लक्ष्मीबाई, स्वामी विवेकानन्द, सरदार वल्लभभाई पटेल एवं मेरीकॉम के चरित्र को जीवन्त किया।

इससे पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द मां द्रोपदी देवी आनंद वृद्धाश्रम में एक-एक कर बुजुर्गों से मिले और उनसे बातचीत की। उन्होंने कई बुजुर्गों से उनके हालचाल जाने और लगातार यही पूछते रहे कि आप यहां कैसा अनुभव कर रहे हैं। आपको यहां पर कोई तकलीफ तो नहीं है। श्री कोविन्द बुजुर्ग महिला-पुरूषों से इस कदर घुलमिल गये कि उनके साथ हंसी-ठहाकों से पूरा परिसर गूंज उठा।

कोविन्द जब संस्थान के बुजुर्गों के मेडिकल वार्ड में पहुंचे तो वहां पर उनकी सारी मेडिकल सुविधाओं की जानकारी ली एवं बुजुर्गों के स्वास्थ्य के बारे में जाना। इसी वार्ड में बुजुर्ग बृजकिशोर शर्मा से जब श्री कोविन्द मिले और उनका हालचाल जानने के बाद वहां से जाने लगे तब उन्हें पता लगा कि वे गाना बहुत अच्छा गाते हैं। यह सुन कर श्री कोविन्द के कहने पर बृजकिशोर ने 'जाने वो कैसे लोग थे जिन्हें प्यार ही प्यार मिला' गीत गाया। यह सुनकर कोविन्द मुस्कुराये और कहा कि यह गाना आपके ऊपर लागू नहीं होता है। यह सुनकर उन्होंने एक और गाना 'छोड़ दे सारी दुनिया किसी के लिए ये मुनासिब नहीं आदमी के लिए' गाया।

धूमधाम से निकली गणगौर की सवारी

उदयपुर (ह. सं.)। विश्वविख्यात झीलों की नगरी उदयपुर में जिला प्रशासन एवं पर्यटन विभाग के साझे में 11 से 13 अप्रेल तक तीन दिवसीय मेवाड़ महोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हुए विविध आयोजनों के दौरान घंटाघर से गणगौर घाट तक विभिन्न समाज की की महिलाओं एवं पुरूषों ने पारंपरिक वेशभूषा धारण कर गणगौर की सवारी निकाली गई। बंशी घाट से गणगौर घाट तक शाही ठाठ-बाट के साथ निकली गणगौर की शाही सवारी विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। राजसी ठाट-बाट के साथ निकली गणगौर की सवारी ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। गणगौर के पर्व पर शिव-पार्वती के रूप में पूजनीय गणगौर व ईसरजी की अनूठी छवि विशेष आकर्षक का केन्द्र रही। इस दौरान लोकगीतों एवं लोकनृत्यों ने वातावरण को सुरम्य और आकर्षक बना दिया। इस अवसर पर आतिशबाजी भी की गई।

तीन दिवसीय मेवाड़ महोत्सव के तहत गणगौर घाट पर आयोजित विदेशी युगल की राजस्थानी वेशभूषा प्रतियोगिता में न्यूजीलैंड के जोनाथन स्पर्क एवं उनकी पत्नी यास्मीन क्लार्क प्रथम, जिम्बाब्वे के बेन काइज़ एवं उनकी माँ जेनिफर द्वितीय तथा ग्रीस की मिस सोना तृतीय स्थान पर रही। सैन फ्रैंसिस्को के पाको और उनकी पत्नी रोजा, नीदरलैंड के विलियम बे और उनकी पत्नी मेफिकी, इटली के सरिगो और उनकी पत्नी जैकलीन को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया।

फोटो - राजेन्द्र हिलोरिया

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं
मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत।
फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।